Kamal.Sandesh
kamalsandesh.org
KamalSandesh

कमल संदेश

वर्ष-20, अंक-10
16-31 मई, 2025 (पाक्षिक)
₹20

'पाकिस्तान के साथ बात होगी तो आतंकवाद और पीओके पर होगी'

मिट्टी में मिले आतंकी ठिकाने

चेन्नई (तमिलनाडु) में 03 मई, 2025 को भाजपा प्रदेश कोर–समिति की बैठक की अध्यक्षता करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा

केवड़िया (गुजरात) में 05 मई, 2025 को 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' पर सरदार वल्लभभाई पटेल को श्रद्धांजलि अर्पित करते भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा एवं अन्य वरिष्ठ नेतागण

नई दिल्ली में 04 मई, 2025 को 'भाजपा को जानें' पहल के तहत अंगोला के राष्ट्रपति एवं अफ्रीकी संघ के अध्यक्ष महामहिम श्री जोआओ लौरेंको का स्वागत करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा

07 मई, 2025 को 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान पाकिस्तान एवं नेपाल से सटे सीमावर्ती राज्यों के मुख्यमंत्रियों एवं उपराज्यपालों की बैठक की अध्यक्षता करते केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह

नई दिल्ली में 01 मई, 2025 को कैलाश कॉलोनी में बोडोफा उपेंद्रनाथ ब्रह्मा की प्रतिमा का अनावरण करते केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह व अन्य वरिष्ठ नेतागण

नई दिल्ली में 09 मई, 2025 को 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान पश्चिमी सीमा पर सुरक्षा स्थिति और भारतीय सशस्त्र बलों की परिचालन तैयारियों की समीक्षा के लिए एक उच्चस्तरीय बैठक की अध्यक्षता करते रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह

कमल संदेश

पाक्षिक पत्रिका

संपादक
डॉ. शिव शक्ति नाथ बक्सी

सह संपादक
संजीव कुमार सिन्हा
राम नयन सिंह

कला संपादक
विकास सैनी
भोला राय

डिजिटल मीडिया
राजीव कुमार
विपुल शर्मा

सदस्यता एवं वितरण
सतीश कुमार

इ-मेल
mail.kamalsandesh@gmail.com
mail@kamalsandesh.com
फोन: 011-23381428, फैक्स: 011-23387887
वेबसाइट: www.kamalsandesh.org

विषय-सूची

06 **पाकिस्तान के साथ बात होगी तो आतंकवाद और पीओके पर होगी : नरेन्द्र मोदी**
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 12 मई को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राष्ट्र को संबोधित किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि राष्ट्र ने हाल के दिनों में...

13 **ऑपरेशन सिंदूर भारत की नीति, नीयत और निर्णायक क्षमता की एक त्रिमूर्ति है: नरेन्द्र मोदी**
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 13 मई को आदमपुर...

17 **ऑपरेशन सिंदूर: भारत की रणनीतिक स्पष्टता और सुनियोजित सेना**
भारतीय सशस्त्र बलों ने 9 आतंकवादी ठिकानों पर समन्वित और सटीक...

21 **मार्शल जिसने दिल जीत लिया**
भारतीय सशस्त्र बलों के सैन्य संचालन महानिदेशक (डीजीएमओ) ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में अपने-अपने बल के बारे में जानकारी दी। इस दौरान प्रश्न-उत्तर काल में न्यूज नेशन के...

32 **पहलगाम में हुआ यह हमला आतंक के सरपरस्तों की हताशा को दिखाता है: नरेन्द्र मोदी**
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 27 अप्रैल को मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की...

लेख

ऑपरेशन सिंदूरः कहानी, सफलता और सीख / **एस. गुरुमूर्ति** 24

ऑपरेशन सिंदूरः आंसुओं से तूफान तक—
एक निडर भारत का उदय / **डॉ. निरंजन बी. पूजार** 28

अन्य

हमारी जीत कुछ ऐसी दिखती है 10

भारत की संप्रभुता की रक्षा में कोई भी सीमा
बाधक नहीं बन सकतीः राजनाथ सिंह 12

प्रधानमंत्री मोदीजी के नेतृत्व में भारत की मुखर प्रतिक्रिया 22

आतंकवादी जिन्हें भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा मार गिराया गया... 23

प्रधानमंत्री ने केरल में विझिंजम अंतरराष्ट्रीय बंदरगाह
राष्ट्र को समर्पित किया 29

भारत का डीबीटीः कल्याणकारी दक्षता में वृद्धि 30

भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते का हुआ सफल समापन 33

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने आगामी जनगणना में जातिवार गणना की दी मंजूरी 34

प्रकाशक एवं मुद्रक: डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास के लिए विष्णु मित्तल द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट नं.-8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)-201306 से मुद्रित एवं डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी.-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003 से प्रकाशित। संपादक- डॉ. शिव शक्ति नाथ बक्सी

सोशल मीडिया से

नरेन्द्र मोदी

आज सुबह मैं एएफएस आदमपुर गया और हमारे बहादुर वायु योद्धाओं एवं सैनिकों से मिला। साहस, दृढ़ संकल्प और निडरता के प्रतीक हमारे बहादुर सैनिकों के साथ रहना एक बहुत ही विशेष अनुभव था। भारत अपने सशस्त्र बलों का हमेशा आभारी रहेगा, जो हमारे राष्ट्र के लिए सदैव समर्पित रहते हैं।

(13 मई, 2025)

जगत प्रकाश नड्डा

हमारे सशस्त्र बलों ने बार-बार अदम्य साहस का परिचय दिया है। #ऑपरेशन सिंदूर के तहत हमने पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवादी ढांचे को ध्वस्त किया है। वहीं हमारे सशस्त्र बलों ने बेजोड़ पराक्रम एवं बलिदान का एक शानदार उदाहरण भी पेश किया है। आज, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आदमपुर एयरबेस पर हमारे बहादुर वायु योद्धाओं एवं सैनिकों से मुलाकात की, उनका हौसला बढ़ाया और 140 करोड़ भारतीयों की ओर से उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। जय हिंद!

(3 फरवरी, 2024)

अमित शाह

मोदी जी ने यह साफ कर दिया है कि भारत ने पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों पर अपनी जवाबी कार्रवाई अभी बंद नहीं की है।

(13 मई, 2025)

राजनाथ सिंह

'आपरेशन सिंदूर' सिर्फ़ एक सैन्य कार्रवाई भर नहीं है, बल्कि भारत की राजनीतिक, सामाजिक और सामरिक इच्छाशक्ति का प्रतीक है। हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्पष्ट कर दिया है कि यह नया भारत है जो आतंकवाद के ख़िलाफ़ सरहद के इस पार और उस पार दोनों तरफ प्रभावी कारवाई करता है।

(11 मई, 2025)

बी.एल. संतोष

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने थिरु पोनमुडी और थिरु सेंथिल बालाजी को अपने मंत्रिमंडल से हटा दिया। यह तमिलनाडु के मतदाताओं की सोच में एक बदलाव का स्पष्ट संकेत है। यहां तक कि डीएमके को भी इसे स्वीकार करना पड़ा। यह तमिलनाडु भाजपा के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। तमिलनाडु में अब आप हिंदू मूल्यों का दुरुपयोग नहीं कर सकते। (27 अप्रैल, 2025)

निर्मला सीतारमण

भारत हमेशा से विविधताओं वाला देश रहा है, जिसमें कई भाषाएं एवं धर्म हैं। अंग्रेजों के भारत आने से और अन्य आक्रमणों से पूर्व विभिन्न जातीयताओं के लोग एक साथ यहां रहा करते थे। भारत और भारतीयों की मानसिकता एक साथ रहने और हर अंतर को पाटने और उसका सम्मान करने की है। कोई वैधानिक बाध्यता नहीं है। (06 मई 2025)

संपादकीय

मिट्टी में मिले आतंकी ठिकाने

भारतीय सेना ने पाक अधिकृत कश्मीर एवं पाकिस्तान के अंदर नौ आतंकी ठिकानों को धूल-धूसरित कर आतंकवादियों एवं उनके आकाओं को ऐसा सबक सिखाया है जो वे कभी भूल नहीं पाएंगे। 'ऑपरेशन सिंदूर' के अंतर्गत भारतीय सेना के शौर्य एवं पराक्रम ने भारत के गौरवशाली इतिहास में पुनः अपना नाम स्वर्णाक्षरों से अंकित कर लिया है। यह भारतीय सेना के तीनों सशस्त्र बलों-थलसेना, वायुसेना एवं जलसेना का संयुक्त अभियान था जिसने भारत के इस संकल्प को सिद्ध किया कि आतंकियों के ठिकानों में घुसकर उन्हें दंडित किया जाएगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सुदृढ़ एवं संकल्पवान नेतृत्व में आज का भारत आतंकवाद के विरुद्ध युद्ध में न तो रुकता है न ही झुकता है। यह भारत सटीक और कठोर उत्तर देता है। दुश्मनों को उनके ठिकानों पर ध्वस्त करने के लिए अत्यंत साहसी एवं आत्मविश्वास से परिपूर्ण नेतृत्व की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे ही नेतृत्व का परिणाम है कि आज आतंकवादियों को उनके किए की सजा दी गई है तथा उनके पापों का दंड उन्हें मिला है। भारत, आज अपनी क्षमता एवं सामर्थ्य के आत्मविश्वास से भरा है तथा पूर्व की घुटना-टेक नीतियों से स्वयं को मुक्त कर चुका है। आज का भारत बदल चुका है।

ऑपरेशन सिंदूर सीमापार के आतंकी हमलों का आवश्यक एवं सही समय पर दिया गया जवाब है। पाकिस्तान प्रायोजित आतंकियों द्वारा पहलगाम में 22 अप्रैल, 2025 को 26 निर्दोष भारतीयों की धर्म के आधार पर हुई नृशंस हत्या का यह सीधा जवाब है। इस ऑपरेशन ने पहलगाम के आतंकी हमले के पश्चात् पाकिस्तान प्रायोजित जैश-ए-मुहम्मद एवं लश्कर-ए-तोएबा के आतंकी ठिकानों को नष्ट कर किया। यह उरी सर्जिकल स्ट्राइक और बालाकोट एयर-स्ट्राइक के पश्चात् आतंकियों को उनके ठिकानों पर दंडित करने का भारतीय संकल्प का परिणाम है। यह अभियान आतंकियों को सबक सिखाने, न्याय करने एवं उन्हें दंडित करने के लिए चलाया गया। इस बार आतंकियों पर न केवल बड़े स्तर पर कार्रवाई की गई, बल्कि पाकिस्तान के काफी अंदर तक जाकर दुश्मनों के कई ठिकानों को पूरी तरह से मिट्टी में मिला दिया गया। इस अभियान से न केवल पाकिस्तान की सुरक्षा को पूरी तरह से भेद पाने में सफलता मिली, बल्कि भारतीय सेना के संकल्पित एवं निर्णायक प्रहार के सामने इसकी कमजोरियां दुनिया के सामने आ गईं। इस अभियान से भारत का यह संकल्प पुनर्स्थापित हुआ है कि भारत के जमीन पर किसी भी हमले का भरपूर जवाब दिया जाएगा।

> **ऑपरेशन सिंदूर सीमापार के आतंकी हमलों का आवश्यक एवं सही समय पर दिया गया जवाब है। पाकिस्तान प्रायोजित आतंकियों द्वारा पहलगाम में 22 अप्रैल, 2025 को 26 निर्दोष भारतीयों की धर्म के आधार पर हुई नृशंस हत्या का यह सीधा जवाब है**

भारतीय सेना ने इस बार अत्याधुनिक, गैर-संपर्कीय युद्ध तकनीक तथा सटीक इंटेलिजेंस युक्त प्रहार का प्रदर्शन किया, जिससे आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत प्राप्त भारत की स्वावलंबी सुरक्षा सामर्थ्य परिलक्षित हुआ है। तीनों सेनाओं के 25 मिनट के अभियान में पाक अधिकृत कश्मीर के प्रमुख आतंकी ठिकाने, जिनमें जैश-ए-मुहम्मद का बहावलपुर एवं लश्कर का मुरीदके कैंप शामिल हैं, निशाने पर रहा। इस दौरान पाकिस्तान के सैन्य ठिकानों एवं आमजन को निशाना बनाए बिना अब्दुल रऊफ अजहर सहित सौ से अधिक आतंकी मारे गए। पाकिस्तान के आतंकियों के साथ संबंध के प्रमाणों के साथ भारत ने प्रमुख देशों एवं संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों को सभी जानकारियां देते हुए पाकिस्तान को राजनयिक स्तर पर अलग-थलग करने में बड़ी सफलता प्राप्त की। पाकिस्तान का आतंकियों को सहयोग-समर्थन देते हुए अपनी जमीन पर सुरक्षित पनाहगार बनाने का एजेंडा आज पूरी तरह बेनकाब हुआ है। इससे पहले, भारत ने 1960 के सिंधु जल समझौते को निलंबित कर दिया तथा सिंधु, चेनाब एवं झेलम पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया है। इससे पाकिस्तान की जल की आवश्यकताएं बुरी तरह से प्रभावित होंगी तथा वह आतंकवाद के विरुद्ध कदम उठाने पर बाध्य होगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्र को संबोधित करते हुए आतंकवाद के विरुद्ध भारत के संकल्प को स्पष्ट किया तथा साफ शब्दों में आतंकी संगठनों एवं उनके प्रायोजकों को चेतावनी दी है। यह स्पष्ट किया गया है कि भारत आतंकी हमलों का भविष्य में और भी कड़ा जवाब देगा तथा आतंकवाद प्रायोजित करने वाली सरकारों एवं आतंकवाद का संचालन करने वालों के बीच कोई अंतर नहीं रखेगा। परमाणु ब्लैकमेल को न मानने के संकल्प के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने यह स्पष्ट किया कि आतंकवाद एवं संवाद, आतंकवाद एवं व्यापार साथ-साथ नहीं चल सकते। न ही पानी और खून साथ-साथ बह सकते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दृढ़ संकल्पित एवं निर्णायक नेतृत्व में भारत ने न केवल अपनी संप्रभुता को मजबूत कानूनी एवं नैतिक धरातल पर दृढ़ता से प्रस्तुत किया है बल्कि अपने सैद्धांतिक एवं सक्षम उत्तर से संयम एवं शक्ति तथा सटीकता एवं लक्ष्य सिद्धि का एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया है। आतंकवाद के विरुद्ध भारत ने अपनी भूराजनैतिक एवं कूटनीतिक प्रत्युत्तर को पुनः मजबूती से प्रदर्शित किया है। ■

shivshaktibakshi@kamalsandesh.org

पाकिस्तान के साथ बात होगी तो आतंकवाद और पीओके पर होगी : नरेन्द्र मोदी

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल, 2025 को हुए बर्बर आतंकी हमले ने देश की अंतरात्मा को झकझोर दिया। इसमें धर्म पूछकर 26 निर्दोष व निहत्थे नागरिकों की हत्या कर दी गयी। इस खौफनाक मंजर से पूरा देश रोष में था और राष्ट्र ने आंतकियों को कड़ा सबक सिखाने का प्रण लिया। आतंकियों और उनके मददगारों को कठोर संदेश देने के लिए भारत ने 7 मई, 2025 की रात को 'ऑपरेशन सिंदूर' लॉच किया और पाकिस्तान स्थित कई विशाल आतंकी ठिकानों पर सटीक प्रहार कर उन्हें मिट्टी में मिला दिया। इससे पहले भारत ने 2016 में उरी हमले के खिलाफ नियंत्रण रेखा पार कर पाकिस्तान स्थित आतंकी कैंपों को ध्वस्त किया था, ऐसे ही 2019 में पुलवामा आतंकी हमले के उत्तर में पाकिस्तान के बालाकोट में एयर स्ट्राइक की गयी थी। सच तो यह है कि 'ऑपरेशन सिंदूर' पिछली सभी कार्यवाहियों से ज्यादा प्रभावशाली और निर्णायक रहा। उल्लेखनीय है कि कार्रवाई 'ऑपरेशन सिंदूर' का नाम स्वयं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ही दिया था।

इस कार्रवाई के दौरान नियंत्रण रेखा पार कर कई सटीक विध्वंशकारी हमले किए गए, जिसमें जैश और लश्कर के आतंकवादी ढांचे को भारी नुकसान पहुंचा। भारत ने स्पष्ट कर दिया कि ये सैन्य हमले आत्मरक्षा हेतु किये गये हैं और यह सीमा पार मौजूद आतंकवादी अड्डों को नष्ट करने के लिए थे। हमारी यह कार्रवाई सैन्य ठिकानों पर नहीं थी। भारत पहले से ही यह चेतावनी देता रहा है कि किसी भी पाकिस्तानी दुस्साहस का उचित जवाब दिया जाएगा और 'ऑपरेशन सिंदूर' को उसी संदर्भ में देखा जाना चाहिए।

राष्ट्र को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि राष्ट्र ने हाल के दिनों में भारत की शक्ति और संयम दोनों को देखा है। उन्होंने प्रत्येक भारतीय नागरिक की ओर से देश की अजेय सशस्त्र सेनाओं, खुफिया एजेंसियों और वैज्ञानिकों को सलाम किया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का राष्ट्र को संबोधन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 12 मई को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राष्ट्र को संबोधित किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि राष्ट्र ने हाल के दिनों में भारत की शक्ति और संयम दोनों को देखा है। उन्होंने प्रत्येक भारतीय नागरिक की ओर से देश की अजेय सशस्त्र सेनाओं, खुफिया एजेंसियों और वैज्ञानिकों को सलाम किया। प्रधानमंत्री ने ऑपरेशन सिंदूर के उद्देश्यों को प्राप्त करने में भारत के बहादुर सैनिकों द्वारा दिखाए गए अटूट साहस, उनकी वीरता, सहनशीलता और अदम्य उत्साह के बारे में बताया। उन्होंने इस अद्वितीय वीरता को राष्ट्र की प्रत्येक मां, बहन और बेटी को समर्पित किया।

22 अप्रैल को पहलगाम में हुए बर्बर आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा करते हुए उन्होंने कहा कि इसने देश और दुनिया को झकझोर दिया है। श्री मोदी ने इस कृत्य को आतंक का एक वीभत्स प्रदर्शन बताया, जिसमें छुट्टियों का आनंद ले रहे निर्दोष नागरिकों को उनके परिवारों और बच्चों के सामने उनकी आस्था के बारे में पूछकर बेरहमी से मार दिया गया। उन्होंने जोर देकर कहा कि यह न केवल क्रूरता का कार्य था, बल्कि राष्ट्र के सौहार्द को तोड़ने का एक घिनौना प्रयास भी था।

हमले पर अपनी गहरी व्यक्तिगत पीड़ा व्यक्त करते हुए श्री मोदी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे पूरा देश— हर नागरिक, हर समुदाय, समाज का हर वर्ग और हर राजनीतिक दल— आतंकवाद के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग में एकजुट है। उन्होंने जोर देकर कहा कि सरकार ने सशस्त्र बलों को आतंकवादियों को खत्म करने की पूरी आजादी दी है। श्री मोदी ने सभी आतंकवादी संगठनों को चेतावनी देते हुए कहा कि वे अब देश की महिलाओं की गरिमा को नुकसान पहुंचाने के प्रयासों के परिणामों को पूरी तरह से समझ गए हैं।

ऑपरेशन सिंदूर: लाखों भारतीयों की भावनाओं का प्रतिबिंब

प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा, "ऑपरेशन सिंदूर केवल एक नाम नहीं है, बल्कि यह लाखों भारतीयों की भावनाओं का प्रतिबिंब है।" उन्होंने इसे न्याय के प्रति एक अखंड प्रतिज्ञा बताया, जिसे दुनिया ने 6-7 मई को पूरा होते देखा। श्री मोदी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारतीय सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान में आतंकवादी ठिकानों और प्रशिक्षण केंद्रों पर सटीक हमले किए, जिससे एक निर्णायक झटका लगा।

उन्होंने कहा कि आतंकवादियों ने कभी नहीं सोचा था कि भारत इतना साहसिक कदम उठाएगा, लेकिन जब अपना देश 'राष्ट्र प्रथम' के अपने मार्गदर्शक सिद्धांत के साथ एकजुट होता है, तो दृढ़ निर्णय लिए जाते हैं और प्रभावशाली परिणाम सामने आते हैं। श्री मोदी ने कहा कि पाकिस्तान में आतंकवादी ठिकानों पर भारत के मिसाइल और ड्रोन हमलों ने न केवल उनके बुनियादी ढांचे को बल्कि उनके मनोबल को भी चकनाचूर कर दिया।

प्रधानमंत्री ने बताया कि बहावलपुर और मुरीदके जैसे स्थान लंबे समय से वैश्विक आतंकवाद के केंद्र के रूप में काम कर रहे थे, जो उन्हें दुनिया भर में बड़े हमलों से जोड़ते हैं, जिसमें अमेरिका के 9/11 हमले, लंदन ट्यूब बम विस्फोट और भारत में दशकों से चली आ रही आतंकवादी घटनाएं शामिल हैं।

100 से अधिक खतरनाक आतंकवादियों का सफाया

श्री मोदी ने कहा कि चूंकि आतंकवादियों ने भारतीय महिलाओं की गरिमा को नष्ट करने का साहस किया था, इसलिए भारत ने आतंक के मुख्यालय को नष्ट कर दिया। उन्होंने कहा कि इस अभियान के परिणामस्वरूप 100 से अधिक खतरनाक आतंकवादियों का सफाया हो गया। इनमें वे प्रमुख व्यक्ति भी शामिल थे, जिन्होंने दशकों से भारत के खिलाफ खुलेआम साजिश रची थी। उन्होंने कहा कि भारत के खिलाफ धमकियां देने वालों को शीघ्र ही निष्प्रभावी कर दिया गया है।

श्री मोदी ने कहा कि भारत के सटीक और जोरदार हमलों ने पाकिस्तान को गहरी हताशा में डाल दिया है, जिससे वह हताश हो गया है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान ने आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में शामिल होने के बजाय एक लापरवाह कार्रवाई की है। उसने भारतीय स्कूलों, कॉलेजों, गुरुद्वारों, मंदिरों और नागरिक घरों पर हमले किए, साथ ही सैन्य ठिकानों को भी निशाना बनाया।

श्री मोदी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे इस आक्रमण ने पाकिस्तान की कमजोरियों को उजागर किया, क्योंकि उसके ड्रोन और मिसाइल भारत की उन्नत वायु रक्षा प्रणालियों के सामने तिनके की तरह ढह गए, जिसने उन्हें आसमान में ही बेअसर कर दिया। उन्होंने कहा कि जब पाकिस्तान ने भारत की सीमाओं पर हमला करने की तैयारी की थी, तब भारत ने पाकिस्तान के भीतर एक निर्णायक झटका दिया। भारतीय ड्रोन और मिसाइलों ने बेहद सटीक हमले किए, जिससे पाकिस्तानी एयरबेस को गंभीर नुकसान पहुंचा, जिसका वह लंबे समय से दावा करता आ रहा था। भारत की प्रतिक्रिया के पहले तीन दिनों के भीतर पाकिस्तान को उसकी उम्मीदों से कहीं अधिक नुकसान उठाना पड़ा। भारत के आक्रामक जवाबी कार्रवाई के बाद पाकिस्तान ने तनाव कम करने के तरीके तलाशने शुरू कर दिए और बढ़ते तनाव से राहत के लिए वैश्विक समुदाय से अपील की।

भारत ने बड़े पैमाने पर आतंकवादी ढांचे को नष्ट किया

प्रधानमंत्री ने खुलासा किया कि भारी नुकसान झेलने के बाद पाकिस्तान की सेना ने 10 मई की दोपहर को भारत के डीजीएमओ से संपर्क किया। तब तक, भारत ने बड़े पैमाने पर आतंकवादी ढांचे को नष्ट कर दिया था, प्रमुख आतंकवादियों को खत्म कर दिया था और पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों को बर्बाद कर दिया था।

श्री मोदी ने कहा कि पाकिस्तान ने अपनी अपील में आश्वासन दिया है कि वह भारत के खिलाफ सभी आतंकवादी गतिविधियों और सैन्य आक्रमण को रोक देगा। इस बयान के आलोक में भारत ने

भारत ने पाकिस्तान की गतिविधियों का दिया उचित उत्तर

- ऑपरेशन सिंदूर पर 7 मई, 2025 को प्रेस ब्रीफिंग के दौरान भारत ने अपनी प्रतिक्रिया को केंद्रित, संयत और गैर भड़काऊ बताया था। पाकिस्तानी सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना नहीं बनाने का विशेष उल्लेख किया गया था। यह भी दोहराया गया कि भारत में सैन्य ठिकानों पर किसी भी हमले का उचित उत्तर दिया जाएगा।
- पाकिस्तान ने 7-8 मई, 2025 की रात ड्रोन और मिसाइलों द्वारा अवंतीपुरा, श्रीनगर, जम्मू, पठानकोट, अमृतसर, कपूरथला, जालंधर, लुधियाना, आदमपुर, भटिंडा, चंडीगढ़, नल, फलोदी, उत्तरलाई और भुज सहित उत्तरी और पश्चिमी भारत में कई सैन्य ठिकानों पर हमला करने का प्रयास किया। इन्हें एकीकृत काउंटर यूएएस ग्रिड और वायु रक्षा प्रणालियों द्वारा बेअसर कर दिया गया। इन हमलों के कई स्थानों से बरामद मलबे पाकिस्तानी हमलों की पुष्टि करते हैं।
- भारतीय सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान में कई स्थानों पर वायु रक्षा रडार और प्रणालियों को निशाना बनाया। भारत ने भी पाकिस्तान की तरह ही उसी क्षेत्र में और उसी तीव्रता से जवाब दिया है। लाहौर में एक वायु रक्षा प्रणाली को निष्प्रभावी करने की जानकारी विश्वसनीय रूप से मिली है।
- पाकिस्तान ने जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा, बारामूला, उरी, पुंछ, मेंढर और राजौरी सेक्टरों में मोर्टार और भारी तीव्रता की तोपों का प्रयोग करते हुए नियंत्रण रेखा के निकट अकारण गोलीबारी में तेजी से बढ़ोतरी की है।
- पाकिस्तान द्वारा की गई गोलीबारी के कारण तीन महिलाओं और पांच बच्चों सहित सोलह निर्दोष लोगों की मृत्यु हुई है। भारत ने पाकिस्तान की ओर से मोर्टार और तोपों की अकारण गोलीबारी का उचित उत्तर दिया है।
- भारतीय सशस्त्र बल पाकिस्तानी सेना द्वारा सम्मान करने की स्थिति में मामले को ओर अधिक ना बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

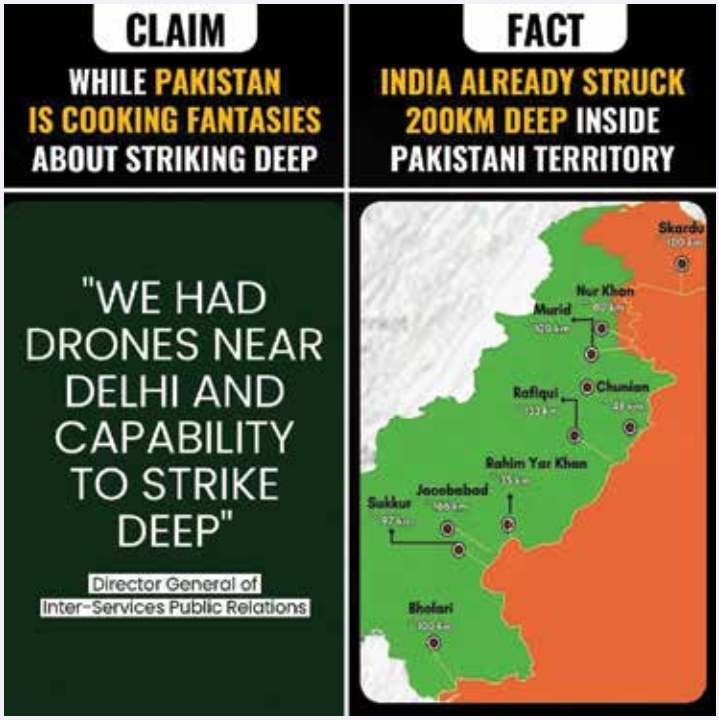

स्थिति की समीक्षा की और पाकिस्तान के आतंकवादी और सैन्य प्रतिष्ठानों के खिलाफ अपने जवाबी अभियानों को अस्थायी रूप से स्थगित करने का फैसला किया। उन्होंने दोहराया कि यह स्थगन कोई निष्कर्ष नहीं है— भारत आने वाले दिनों में पाकिस्तान के हर कदम का आकलन करना जारी रखेगा, यह सुनिश्चित करते हुए कि उसके भविष्य के कार्य उसकी प्रतिबद्धताओं के अनुरूप हों।

'ऑपरेशन सिंदूर' अब आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत की स्थापित नीति

प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि भारत के सशस्त्र बल— सेना, वायु सेना, नौसेना, सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) और अर्धसैनिक इकाइयां— हर समय राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हाई अलर्ट पर रहती हैं। उन्होंने घोषणा की, "ऑपरेशन सिंदूर अब आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत की स्थापित नीति है, जो भारत के रणनीतिक दृष्टिकोण में एक निर्णायक बदलाव को दर्शाता है।" श्री मोदी ने कहा कि इस ऑपरेशन ने आतंकवाद विरोधी उपायों में एक नया पैमाना, एक न्यू नॉर्मल स्थापित किया है।

प्रधानमंत्री ने भारत के सुरक्षा सिद्धांत के तीन प्रमुख स्तंभों के बारे में बताया; पहला है— निर्णायक जवाबी कार्रवाई, जब भारत पर किसी भी आतंकवादी हमले का मजबूत और दृढ़ जवाब दिया जाएगा। भारत अपनी शर्तों पर जवाबी कार्रवाई करेगा, आतंकी ठिकानों को उनकी जड़ों पर निशाना बनाएगा। दूसरा है— एटॉमिक ब्लैकमेल को बर्दाश्त नहीं करना; भारत एटॉमिक धमकियों से नहीं डरेगा।

उन्होंने बताया कि 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान दुनिया ने एक बार फिर पाकिस्तान की परेशान करने वाली सच्चाई देखी— मारे गए आतंकवादियों

के अंतिम संस्कार में पाकिस्तान के वरिष्ठ सैन्य अधिकारी खुलेआम शामिल हुए, जिससे साबित होता है कि राज्य प्रायोजित आतंकवाद में पाकिस्तान की गहरी संलिप्तता है। प्रधानमंत्री ने फिर से पुष्टि करते हुए कहा कि भारत अपने नागरिकों को किसी भी खतरे से बचाने के लिए निर्णायक कदम उठाता रहेगा।

भारत ने युद्ध के मैदान में पाकिस्तान को लगातार हराया है

इस बात पर जोर देते हुए कि भारत ने युद्ध के मैदान में पाकिस्तान को लगातार हराया है और ऑपरेशन सिंदूर ने देश की सैन्य शक्ति में एक नया आयाम जोड़ा है, श्री मोदी ने रेगिस्तान और पहाड़ी युद्ध दोनों में भारत की उल्लेखनीय क्षमता पर प्रकाश डाला और साथ ही नए युग के युद्ध में श्रेष्ठता स्थापित की। उन्होंने जोर देकर कहा कि ऑपरेशन के दौरान 'मेड इन इंडिया' रक्षा उपकरणों की प्रामाणिकता निर्णायक रूप से साबित हुई। श्री मोदी ने कहा कि दुनिया अब 21वीं सदी के युद्ध में एक दुर्जेय शक्ति के रूप में मेड इन इंडिया रक्षा प्रणालियों के आगमन को देख रही है।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि आतंकवाद के सभी रूपों के खिलाफ लड़ाई में एकता भारत की सबसे बड़ी ताकत है। श्री मोदी ने कहा कि यह युग युद्ध का नहीं है, लेकिन आतंकवाद का भी नहीं है। उन्होंने कहा, "आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस एक बेहतर और सुरक्षित दुनिया की गारंटी है।"

श्री मोदी ने जोर देकर कहा कि पाकिस्तान की सेना और सरकार ने लगातार आतंकवाद को बढ़ावा दिया है। उन्होंने चेतावनी दी कि इस तरह की कार्रवाइयां अंततः पाकिस्तान के पतन का कारण बनेंगी। श्री मोदी ने घोषणा करते हुए कहा कि अगर पाकिस्तान को अपना अस्तित्व बचाना है, तो उसे अपने आतंकी ढांचे को खत्म करना होगा— शांति का कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते

श्री मोदी ने भारत के अटूट संकल्प की पुष्टि करते हुए कहा कि टेरर और टॉक एक साथ नहीं चल सकते, टेरर और ट्रेड साथ-साथ नहीं चल सकते और खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते। वैश्विक समुदाय को संबोधित करते हुए उन्होंने भारत की लंबे समय से चली आ रही नीति को दोहराया कि पाकिस्तान के साथ कोई भी बात होगी तो केवल टेरर पर होगी, पाकिस्तान के साथ कोई भी बात होगी तो केवल पीओके पर होगी।

बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर प्रधानमंत्री ने भगवान बुद्ध की शिक्षाओं के बारे में बताया और इस बात पर जोर दिया कि शांति का मार्ग शक्ति द्वारा निर्देशित होना चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मानवता को शांति और समृद्धि की ओर बढ़ना चाहिए, यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक भारतीय सम्मान के साथ रह सके और विकसित भारत के सपने को साकार कर सके।

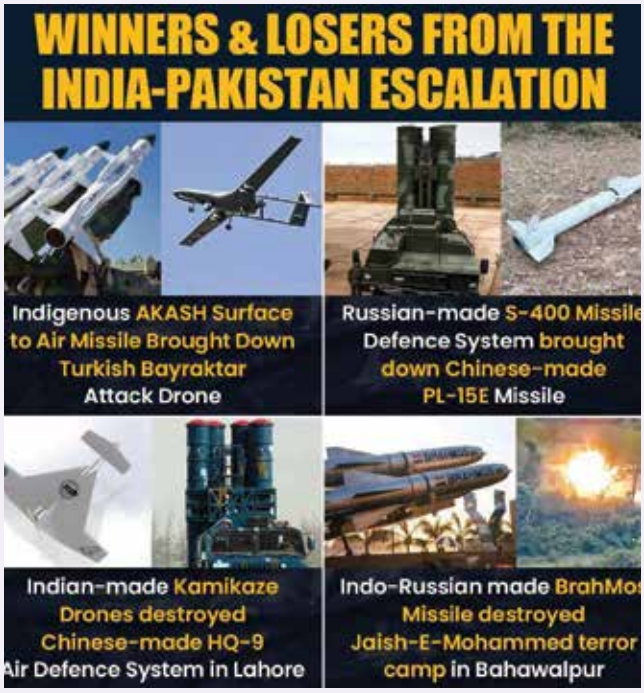

श्री मोदी ने जोर देकर कहा कि भारत को शांति बनाए रखने के लिए मजबूत होना चाहिए और जब आवश्यक हो, तो उस ताकत का प्रयोग किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हाल की घटनाओं ने अपने सिद्धांतों की रक्षा करने के भारत के संकल्प को प्रदर्शित किया है। अपने संबोधन के समापन पर उन्होंने एक बार फिर भारतीय सशस्त्र बलों की वीरता को सलाम किया और भारत के लोगों के साहस और एकता के प्रति अपना गहरा सम्मान व्यक्त किया।

मुख्य बातें

- आज हर आतंकी, आतंक का हर संगठन जान चुका है कि हमारी बहनों-बेटियों के माथे से सिंदूर हटाने का अंजाम क्या होता है
- ऑपरेशन सिंदूर न्याय की अखंड प्रतिज्ञा है
- आतंकियों ने हमारी बहनों का सिंदूर उजाड़ा था; इसलिए भारत ने आतंक के मुख्यालय को ही उजाड़ दिया
- पाकिस्तान की तैयारी सीमा पर वार की थी, लेकिन भारत ने पाकिस्तान के सीने पर वार कर दिया
- ऑपरेशन सिंदूर ने आतंक के खिलाफ लड़ाई में एक नई लकीर खींच दी है, एक नया पैमाना, न्यू नॉर्मल तय कर दिया है
- निश्चित तौर पर यह युग युद्ध का नहीं है, लेकिन यह युग आतंकवाद का भी नहीं है
- आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस एक बेहतर दुनिया की गारंटी है
- टेरर और टॉक, एक साथ नहीं हो सकते, टेरर और ट्रेड, एक साथ नहीं चल सकते, पानी और खून भी एक साथ नहीं बह सकता ■

हमारी जीत कुछ ऐसी दिखती है

'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान प्रमुख पाकिस्तानी एयरबेसों पर भारत के 90 मिनट के लक्षित हमलों ने क्षेत्रीय सैन्य गतिशीलता में एक निर्णायक बदलाव की ओर इशारा किया है। इन सटीक हमलों ने पाकिस्तान की हवाई शक्ति, रक्षा तंत्र के समन्वय और किसी भी सार्थक जवाबी कार्रवाई को अंजाम देने की उसकी क्षमता को खत्म कर दिया। प्रत्येक बेस अपनी विशेषता रखता है और इनको क्षति पहुंचाये जाने से पाकिस्तान पर रणनीति और मनोवैज्ञानिक दबाव पड़ा।

1. नूर खान/चकलाला एयरबेस (रावलपिंडी)

नूर खान पर भारत के हमले ने पाकिस्तान की हवाई रसद एवं सैन्य समन्वय को बाधित किया। इस्लामाबाद के नजदीकी इस बेस को अक्सर वीआईपी गतिविधियों और सैन्य रसद पहुंचाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, इसके बर्बाद होने से पाकिस्तानी वायु सेना (पीएएफ) के शीर्ष नेतृत्व एवं इसकी परिचालन इकाइयों के बीच समन्वय टूट गया।

2. पीएएफ बेस रफीकी (शोरकोट)

रफीकी, एक प्रमुख लड़ाकू बेस है, जो फ्रंटलाइन लड़ाकू स्क्वाड्रनों का अड्डा है, उसका परिचाल बाधित किया गया। इसके एयरक्राफ्ट शेल्टर और रनवे को बर्बाद कर पाकिस्तान की काउंटर-एयर ऑपरेशन शुरू करने की क्षमता को काफी कमजोर कर दिया, खासकर मध्य पंजाब में इस बेस की भूमिका अहम है। इस कदम ने प्रभावी रूप से पीएएफ के सबसे तेज आक्रामक करने की क्षमता को नष्ट कर दिया।

3. मुरीद एयरबेस (पंजाब)

मुरीद को निशाना बनाकर भारत ने एक महत्वपूर्ण प्रशिक्षण केंद्र और संभावित मिसाइल भंडारण को बाधित कर दिया। इस हमले ने पाकिस्तानी वायु सेना की दीर्घकालिक तत्परता को प्रभावित किया। साथ ही पायलट प्रशिक्षण पाइपलाइन को नुकसान पहुंचाया और भविष्य के किसी भी ऑपरेशन में रसद पहुंचाने की इस बेस की क्षमताओं को समाप्त किया।

4. सुक्कुर एयरबेस (सिंध)

भारत द्वारा सुक्कुर एयरबेस को नुकसान पहुंचाने से पाकिस्तान का दक्षिणी हवाई गलियारा कट गया। सुक्कुर सिंध और बलूचिस्तान में सेना और उपकरणों की आवाजाही के लिए जरूरी था। इसके नष्ट होने से एक प्रमुख रसद प्रणाली प्रभावित हुई और दक्षिण में पाकिस्तान की क्षमता कमजोर हुई।

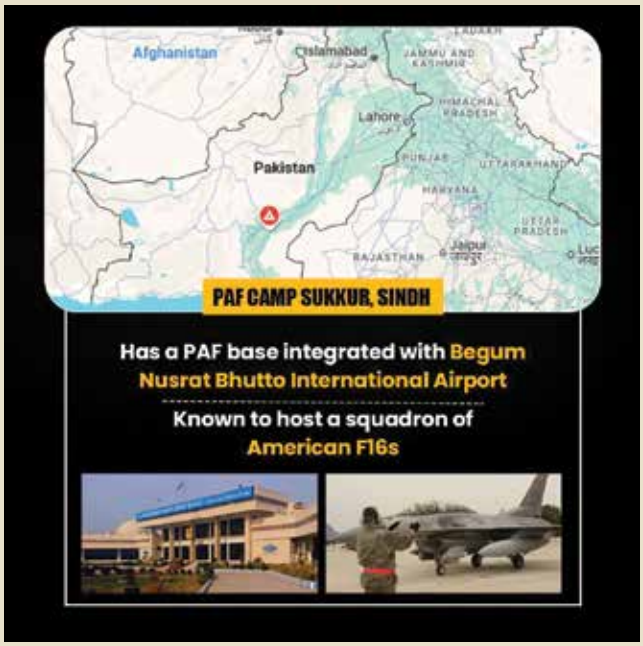

छेड़ोगे तो छोड़ेंगे नहीं : जगत प्रकाश नड्डा

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 'एक्स' पर कहा, "पहलगाम पर भारत का पैग़ाम - छेड़ोगे तो छोड़ेंगे नहीं। प्रधानमंत्री मोदी जी ने कहा—भारत की आत्मा पर हमला करने वालों को कड़ी सज़ा मिलेगी। भारत आतंकवाद को उसकी जड़ से उखाड़ फेंकने में सक्षम भी है और संकल्पबद्ध भी है। मिटा देंगे आतंकवाद का नासूर।"

हमें अपने सशस्त्र बलों पर गर्व है: अमित शाह

हमें अपने सशस्त्र बलों पर गर्व है।

#ऑपरेशनसिंदूर पहलगाम में हमारे निर्दोष भाइयों की क्रूर हत्या के प्रति भारत की प्रतिक्रिया है। मोदी सरकार भारत और उसके नागरिकों पर किसी भी हमले का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए प्रतिबद्ध है। भारत आतंकवाद को जड़ से खत्म करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

5. सियालकोट एयरबेस (पूर्वी पंजाब)

सियालकोट, जो भारतीय सीमा के करीब स्थित है, उसे संघर्ष की शुरुआत में ही नष्ट कर दिया गया था। यह बेस जम्मू और पंजाब की ओर उड़ान भरने के लिए एक अग्रिम परिचालन केंद्र के रूप में काम करता था। इसके नष्ट होने से पूर्वी सीमा पर एक महत्वपूर्ण ब्लाइंड स्पॉट बन गया, जिससे पाकिस्तानी स्थल सेना पर हमला करने में भारतीय वायुसेना के समक्ष आने वाली चुनौतियां समाप्त हो गयीं।

6. पसरूर हवाई पट्टी (पंजाब)

हालांकि पसरूर एक छोटी हवाई पट्टी है, लेकिन इसका उपयोग आपातकालीन विमान संचालन में किया जा सकता है। इसे नष्ट कर भारत ने पाकिस्तान की सामरिक शक्ति को कमजोर किया और पाकिस्तानी वायुसेना को अन्य अधिक संवेदनशील, उच्च प्रोफाइल बेस से उड्डान भरे पर मजबूर किया।

7. चुनियान (रडार/सहायता केंद्र)

चुनियान पर हमलों ने रडार कवरेज और संचार के बुनियादी ढांचे को बाधित किया, जो मध्य पंजाब के हवाई क्षेत्र की निगरानी के लिए महत्वपूर्ण था। इस हमले ने पाकिस्तान की प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली को निष्क्रिय कर दिया, जिससे भारतीय विमानों को उड़ान भरते समय कम जोखिम का सामना करना पड़ा।

8. सरगोधा एयरबेस (मुशाफ बेस)

सरगोधा एयरबेस पर प्रहार एक रणनीतिक मास्टरस्ट्रोक था। यह पाकिस्तान का सबसे महत्वपूर्ण बेस है, जहां कॉम्बैट कमांडर्स स्कूल, परमाणु प्लेटफॉर्म और उच्चस्तरीय स्क्वाड्रन मौजूद है। इसके ध्वस्त होने से पाकिस्तान की कमान और नियंत्रण संरचना पर असर पड़ा। यह झटका परिचालन और प्रतीकात्मक दोनों दृष्टि से अहम था, जिसने एक अजेय पीएएफ के मिथक को चकनाचूर कर दिया।

9. स्कार्दू एयरबेस (गिलगित-बाल्टिस्तान)

स्कार्दू पर भारत के हमले से वास्तविक नियंत्रण रेखा के पास पाकिस्तान की उत्तरी निगरानी प्रणाली और हवाई अभियान कमजोर हो गए। इससे हिमालय क्षेत्र में चीनी-पाकिस्तानी समन्वय को मदद करने वाले सैन्य संपर्क भी बाधित हुए। उत्तरी क्षेत्र में सामरिक बढ़त अब पूरी तरह से भारत के पास है।

10. भोलारी एयरबेस (कराची के पास)

यह पाकिस्तान के सबसे नए एयरबेस में से एक है, जो नौसेना और वायुसेना दोनों के लिए अहम है, भोलारी पाकिस्तान की भविष्य की रणनीति के लिए महत्वपूर्ण था। इसके ध्वस्त होने से उन आकांक्षाओं को गहरी चोट पहुंची है। हमने तटीय रक्षा समन्वय को प्रभावित किया और कराची को भारत के हमलों की दृष्टि से असुरक्षित बना दिया।

11. जैकोबाबाद एयरबेस (सिंध-बलूचिस्तान)

जैकोबाबाद के नष्ट होने से पश्चिमी पाकिस्तान और भी अलग-थलग पड़ गया। ऐतिहासिक रूप से इसका इस्तेमाल तेजी से सैन्य तैनाती के लिए किया जाता था और यहां तक कि आतंकवाद के खिलाफ युद्ध के दौरान अमेरिकी सेना द्वारा भी इसका इस्तेमाल किया जाता था, लेकिन इसके नष्ट होने से आंतरिक गतिशीलता, आपूर्ति श्रृंखला और पाकिस्तान की पश्चिमी हवाई निगरानी बाधित हो गई।

अंत में कहा जा सकता है कि इन एयरबेसों पर भारत के त्वरित और समन्वित हमलों ने पाकिस्तान की हवाई क्षमताओं को रणनीतिक रूप से ध्वस्त कर दिया। रडार नेटवर्क, कमांड हब और स्ट्राइक प्लेटफॉर्म को नष्ट करने से पीएएफ पंगु हो गया। युद्ध के मैदान में जीत से कहीं अधिक, ये संरचनात्मक विध्वंस थे—जिसका उद्देश्य पाकिस्तान की लड़ने की क्षमता को अक्षम करना और भविष्य में आक्रमण से बचाव था।

इस ऑपरेशन ने न केवल भारत की तकनीकी और सामरिक श्रेष्ठता को प्रदर्शित किया, बल्कि दक्षिण एशिया में भारत की शक्तियों को भी पुनर्परिभाषित किया। पाकिस्तान के एयरबेसों के विनाश ने एक स्पष्ट संदेश दिया: अब बढ़त भारत के हाथ में है और किसी भी उकसावे की कीमत विनाशकारी होगी। ■

भारत की संप्रभुता की रक्षा में कोई भी सीमा बाधक नहीं बन सकती: राजनाथ सिंह

ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में नौ आतंकी शिविर नष्ट किए गए और बड़ी संख्या में आतंकवादियों को मार गिराया गया

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने आठ मई को नई दिल्ली में कहा कि हमारे अजेय और पेशेवर रूप से प्रशिक्षित सशस्त्र बल के उच्च गुणवत्तापूर्ण उपकरणों से लैस होने से 'ऑपरेशन सिंदूर' सफलतापूर्वक संचालित किया जा सका। रक्षा मंत्री ने किसी भी निर्दोष व्यक्ति को नुकसान पहुंचाए बिना तथा न्यूनतम क्षति के साथ सशस्त्र बलों द्वारा इस अभियान को सटीकता के साथ अंजाम देने की सराहना की तथा इसे सोच से परे तथा राष्ट्र के लिए गर्व का विषय बताया।

श्री राजनाथ सिंह ने कहा, "ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में नौ आतंकी शिविर नष्ट किए गए और बड़ी संख्या में आतंकवादियों को मार गिराया गया।"

भारत एक जिम्मेदार राष्ट्र

रक्षा मंत्री ने जोर देकर कहा कि भारत ने हमेशा बेहद संयम बरतते हुए एक जिम्मेदार राष्ट्र की भूमिका निभाई है और वह बातचीत के जरिए मुद्दों को सुलझाने में विश्वास रखता है। पर अगर कोई उसके संयम का फायदा उठाने की कोशिश करता है, तो उसे 'कठोर कार्रवाई' का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने देश को आश्वस्त किया कि भारत की संप्रभुता की रक्षा में सरकार के लिए कोई भी सीमा बाधक नहीं बनेगी। उन्होंने कहा कि हम भविष्य में भी ऐसी किसी दायित्वपूर्ण जवाबी कार्रवाई के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के रक्षा संप्रभुता के दृष्टिकोण के अनुरूप रक्षा मंत्री ने 2014 से ही रक्षा उत्पादन क्षेत्र के सशक्तीकरण पर सरकार द्वारा जोर दिए जाने की बात कही। उन्होंने कहा कि रक्षा संप्रभुता का अर्थ है कि जब तक कोई देश अपनी रक्षा आवश्यकताओं में सक्षम और आत्मनिर्भर नहीं होता, तब तक उसकी स्वतंत्रता सम्पूर्ण नहीं मानी जा सकती।

रक्षा मंत्री ने कहा कि अगर हम विदेश से हथियार और अन्य रक्षा उपकरण खरीदते हैं, तो हम अपनी सुरक्षा को आउटसोर्स कर रहे हैं और इसे किसी और के भरोसे छोड़ रहे हैं। हमारी सरकार ने इस पर गंभीरता से विचार कर आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए निर्णायक कदम उठाया है और यही विस्तारित रक्षा औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र भारत को अभूतपूर्व शक्ति प्रदान कर रहा है।

श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि रक्षा उत्पादन में गुणवत्ता और मात्रात्मक उत्पादन पर समान जोर दिया जा रहा है और इस दिशा में कई बड़े कदम उठाए जा रहे हैं, जिसमें आयुध निर्माणी बोर्ड (ओएफबी) का निगमीकरण भी शामिल है। रक्षा मंत्री ने बताया कि

सार्वजनिक क्षेत्र की प्रगति का उद्देश्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धी निजी रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना रहा है, जो गुणवत्ता द्वारा भारत की सुरक्षा सुदृढ़ करेगा। उन्होंने कहा कि आज विश्व में एक मजबूत ब्रांड उत्पाद से ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है। जो ब्रांड लगातार गुणवत्ता और विश्वसनीयता आश्वस्त कराता है, वही सफल होता है।

2024 में विश्व सैन्य व्यय 2,718 बिलियन डॉलर

वैश्विक व्यवस्था में हो रहे व्यापक बदलावों के बारे में रक्षा मंत्री ने कहा कि जब विकसित देश पुनः शस्त्रीकरण की ओर बढ़ेंगे तो हथियारों और उपकरणों की मांग बढ़ेगी। उन्होंने स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि 2024 में विश्व सैन्य व्यय 2,718 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि समन्वित प्रयासों से भारतीय रक्षा विनिर्माण क्षेत्र ब्रांड इंडिया दर्शन के साथ वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना सकता है।

रक्षा मंत्री ने कहा कि वित्त वर्ष 2024-25 में रक्षा निर्यात 24,000 करोड़ रुपये के रिकॉर्ड आंकड़े को पार कर गया। अब हमारा लक्ष्य 2029 तक इस आंकड़े को बढ़ाकर 50,000 करोड़ रुपये पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र और दुनिया का सबसे बड़ा रक्षा निर्यातक बनाना हमारा लक्ष्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमें अपने रक्षा उपकरणों की गुणवत्ता के बारे में वैश्विक भरोसा हासिल करना होगा। ■

प्रधानमंत्री ने आदमपुर स्थित वायुसेना स्टेशन पर बहादुर वायु योद्धाओं और सैनिकों के साथ की बातचीत

ऑपरेशन सिंदूर भारत की नीति, नीयत और निर्णायक क्षमता की एक त्रिमूर्ति है: नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 13 मई को आदमपुर स्थित वायुसेना स्टेशन पर बहादुर वायु योद्धाओं और सैनिकों से मुलाकात की और उनसे परस्पर बातचीत की। उन्हें संबोधित करते हुए श्री मोदी ने 'भारत माता की जय' के नारे की शक्ति को रेखांकित किया और इस बात पर जोर दिया कि दुनिया ने अभी-अभी इसकी ताकत देखी है। यह टिप्पणी करते हुए कि यह केवल एक नारा नहीं है, बल्कि भारत माता की गरिमा को बनाए रखने के लिए अपने जीवन को जोखिम में डालने वाले प्रत्येक सैनिक द्वारा ली गई शपथ है, प्रधानमंत्री ने कहा कि यह नारा प्रत्येक नागरिक की आवाज है जो देश के लिए जीना चाहता है और सार्थक योगदान देना चाहता है।

उन्होंने इस बात पर बल दिया कि 'भारत माता की जय' युद्ध के मैदान और महत्वपूर्ण मिशनों दोनों में गूंजती है। श्री मोदी ने कहा कि जब भारतीय सैनिक 'भारत माता की जय' का नारा लगाते हैं, तो दुश्मन की रीढ़ में सिहरन पैदा हो जाती है। उन्होंने भारत की सैन्य शक्ति पर जोर देते हुए कहा कि जब भारतीय ड्रोन दुश्मन की किलेबंदी को ध्वस्त करते हैं और जब मिसाइलें सटीक हमला करती हैं, तो दुश्मन को केवल एक ही वाक्य सुनाई देता है— 'भारत माता की जय'।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि भारत के पास बेहद अंधेरी रात में भी आसमान को रोशन करने की क्षमता है जो दुश्मनों को देश की अदम्य भावना का एहसास करा देता है। उन्होंने कहा कि जब भारत की सेना परमाणु ब्लैकमेल की धमकियों को ध्वस्त कर देती है, तो आसमान और धरती पर बस एक संदेश गूंजता है— 'भारत माता की जय'।

प्रधानमंत्री आदमपुर वायु सेना स्टेशन पर बहादुर वायु योद्धाओं और सैनिकों से मिले

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 13 मई, 2025 को वायु सेना स्टेशन आदमपुर जाकर हमारे बहादुर वायु योद्धाओं और सैनिकों से मुलाकात की। इस अवसर पर श्री मोदी ने कहा, "साहस, दृढ़ संकल्प और निडरता के प्रतीक वीर जवानों से मिलना विशिष्ट अनुभव रहा।"

प्रधानमंत्री ने एक्स पर पोस्ट किया, "आज सुबह, मैं एएफएस आदमपुर गया और हमारे बहादुर वायु योद्धाओं और सैनिकों से मिला। साहस, दृढ़ संकल्प और निडरता के प्रतीक उन लोगों के साथ समय बिताना बहुत ही विशेष अनुभव था। भारत हमारे सशस्त्र बलों के प्रति हमेशा आभारी रहेगा, जो हमारे देश के लिए सब कुछ करते हैं।"

सशस्त्र बलों की अद्वितीय बहादुरी पर आज हर भारतीय का सिर गर्व से ऊंचा

भारत के सशस्त्र बलों के साहस और दृढ़ संकल्प की सराहना करते हुए श्री मोदी ने कहा कि उन्होंने लाखों भारतीयों के दिलों

को गर्व से भर दिया है। उन्होंने कहा कि सशस्त्र बलों की अद्वितीय बहादुरी और ऐतिहासिक उपलब्धियों के कारण आज हर भारतीय का सिर गर्व से ऊंचा है। श्री मोदी ने कहा कि इन वीर नायकों से मिलना वास्तव में सौभाग्य की बात है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जब दशकों बाद देश की वीरता की चर्चा होगी, तो इस मिशन का नेतृत्व करने वाले सैनिक सबसे अधिक चर्चित होंगे। श्री मोदी ने जोर देकर कहा कि वे न केवल वर्तमान बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन गए हैं।

वीर योद्धाओं की भूमि से सशस्त्र बलों को संबोधित करते हुए उन्होंने वायु सेना, नौसेना, सेना और सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के साहसी कर्मियों का अभिवादन किया। श्री मोदी ने उनके वीरतापूर्ण प्रयासों की सराहना की और कहा कि ऑपरेशन सिंदूर का प्रभाव पूरे देश में गूंज रहा है। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन के दौरान हर भारतीय सैनिकों के साथ मजबूती से खड़ा था, प्रार्थना कर रहा था और अटूट समर्थन दे रहा था। श्री मोदी ने भारतीय सैनिकों और उनके परिवारों के प्रति पूरे देश की गहरी कृतज्ञता व्यक्त की और उनके बलिदान को सराहा।

अन्याय के खिलाफ हथियार उठाना हमेशा से भारत की परंपरा रही

प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा, "ऑपरेशन सिंदूर कोई साधारण सैन्य अभियान नहीं है, बल्कि यह भारत की नीति, इरादे और निर्णायक क्षमता की त्रिमूर्ति है।" उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत बुद्ध और गुरु गोविंद सिंह जी दोनों की भूमि है, जिन्होंने कहा था, "सवा लाख से एक लड़ाऊं, चिड़ियन ते मैं बाज़ तुड़ाऊं, तबै गुरु गोबिंद सिंह नाम कहाऊं।" उन्होंने कहा कि धर्म की स्थापना के लिए अन्याय के खिलाफ हथियार उठाना हमेशा से भारत की परंपरा रही है।

श्री मोदी ने पुष्टि की कि जब आतंकवादियों ने भारत की बेटियों पर हमला करने और उन्हें नुकसान पहुंचाने की हिम्मत की, तो भारतीय सेना ने उन्हें उनके ही ठिकानों में कुचल दिया। उन्होंने कहा कि ये हमलावर कायरतापूर्ण तरीके से छिपकर आए थे, यह भूल गए कि उन्होंने किसे चुनौती दी थी— शक्तिशाली भारतीय सशस्त्र बलों को। श्री मोदी ने भारत के सैनिकों की बहादुरी की प्रशंसा की, उन्होंने कहा कि उन्होंने सीधे हमला किया, प्रमुख आतंकी ठिकानों को ध्वस्त कर दिया। नौ आतंकवादी ठिकाने नष्ट कर दिए गए और 100 से अधिक आतंकवादियों को मार गिराया गया। प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि आतंकवाद के आकाओं को अब भारत को उकसाने के एक निर्विवाद परिणाम को समझ गए हैं— पूरी तबाही।

आतंकवादियों के लिए कोई सुरक्षित पनाहगाह नहीं बची

श्री मोदी ने जोर देकर कहा कि भारत में निर्दोष लोगों का खून बहाने की किसी भी कोशिश से केवल विनाश ही होगा, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इन आतंकवादियों को पनाह देने वाली पाकिस्तानी सेना को भारतीय सेना, वायु सेना और नौसेना ने निर्णायक रूप से हरा दिया है। प्रधानमंत्री ने कहा, "भारतीय सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान को स्पष्ट संदेश दिया है— आतंकवादियों के लिए कोई सुरक्षित पनाहगाह नहीं बची है", उन्होंने पुष्टि की कि भारत उन्हें उनके ही क्षेत्र में मार गिराएगा, ताकि भागने का कोई मौका न मिले। श्री मोदी ने घोषणा की कि भारत के ड्रोन और मिसाइलों ने ऐसा डर पैदा कर दिया है कि पाकिस्तान उनके बारे में सोचकर ही कई दिनों तक नींद खो देगा। महाराणा प्रताप के प्रसिद्ध घोड़े चेतक के बारे में लिखी गई पंक्तियों को उद्धृत करते हुए उन्होंने टिप्पणी की कि ये शब्द अब भारत के उन्नत आधुनिक हथियारों के साथ पूरी तरह से मेल खाते हैं।

श्री मोदी ने सशस्त्र बलों के असाधारण प्रयासों की सराहना करते हुए कहा, "ऑपरेशन सिंदूर की सफलता ने राष्ट्र के संकल्प को मजबूत किया है, देश को एकजुट किया है, भारत की सीमाओं की रक्षा की है और भारत के गौरव को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है।" उन्होंने भारतीय वायुसेना के हमलों की जबरदस्त सटीकता को रेखांकित किया और कहा कि उन्होंने पाकिस्तान के भीतर आतंकवादी ठिकानों को सफलतापूर्वक निशाना बनाया।

श्री मोदी ने कहा कि केवल 20-25 मिनट के भीतर भारतीय बलों ने सीमा पार हमलों को पूरी सटीकता के साथ अंजाम दिया और सटीक लक्ष्यों को भेदा। उन्होंने जोर देकर कहा कि इस तरह के ऑपरेशन केवल आधुनिक, तकनीकी रूप से सुसज्जित और अत्यधिक पेशेवर बल द्वारा ही किए जा सकते हैं। श्री मोदी ने भारतीय सेना की गति और सटीकता की सराहना करते हुए कहा कि उनकी

त्वरित और निर्णायक कार्रवाई ने दुश्मन को पूरी तरह से स्तब्ध कर दिया। उन्होंने कहा कि विरोधियों को पता ही नहीं चला कि उनके गढ़ कब मलबे में तब्दील हो गए।

भारतीय सेना ने अत्यंत सावधानी और सटीकता के साथ जवाब दिया

इस बात पर जोर देते हुए कि भारत का उद्देश्य पाकिस्तान के अंदर आतंकवादी मुख्यालयों पर हमला करना और प्रमुख आतंकवादियों को खत्म करना था, प्रधानमंत्री ने कहा कि पाकिस्तान द्वारा नागरिक विमानों का उपयोग करके अपनी गतिविधियों को छिपाने के प्रयास के बावजूद भारतीय सेना ने अत्यंत सावधानी और सटीकता के साथ जवाब दिया। उन्होंने सतर्कता और जिम्मेदारी बनाए रखते हुए अपने मिशन को सफलतापूर्वक अंजाम देने के लिए सशस्त्र बलों की सराहना की। श्री मोदी ने गर्वपूर्वक घोषणा की कि भारतीय सैनिकों ने अपने उद्देश्यों को पूरी सटीकता और दृढ़ संकल्प के साथ पूरा किया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि इस ऑपरेशन ने न केवल पाकिस्तान के भीतर आतंकवादी ठिकानों और एयरबेसों को नष्ट कर दिया, बल्कि उनके नापाक इरादों और दुर्भावनापूर्ण दुस्साहस को भी कुचल दिया।

भारत की शक्तिशाली वायु रक्षा प्रणाली

श्री मोदी ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के बाद दुश्मन ने बौखलाकर कई भारतीय एयरबेस को निशाना बनाने की बार-बार कोशिश की। हालांकि, पाकिस्तान के हर हमले को निर्णायक रूप से विफल कर दिया गया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत की शक्तिशाली वायु रक्षा प्रणाली के सामने पाकिस्तानी ड्रोन, यूएवी, विमान और मिसाइलें सभी विफल हो गए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत की तैयारियों और तकनीकी ताकत ने दुश्मन के खतरों को पूरी तरह से बेअसर कर दिया। श्री मोदी ने देश के एयरबेस की देखरेख करने वाले शीर्ष अधिकारियों की सराहना की और भारतीय वायु सेना के हर वायु योद्धा की हार्दिक प्रशंसा की। उन्होंने देश की रक्षा में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन और अटूट समर्पण की सराहना की।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ भारत का रुख अब पूरी तरह से स्पष्ट है। उन्होंने कहा कि अगर भारत पर कोई और आतंकवादी हमला होता है तो देश निर्णायक और मजबूती से जवाब देगा। श्री मोदी ने सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक के दौरान भारत की दृढ़ कार्रवाई को याद करते हुए कहा कि ऑपरेशन सिंदूर अब खतरों से निपटने में देश का नया मानक बन गया है। उन्होंने तीन प्रमुख सिद्धांतों को दोहराया जो उन्होंने कल रात राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में व्यक्त किए थे। सबसे पहले, अगर भारत पर कोई आतंकवादी हमला होता है तो जवाब अपनी शर्तों पर दिया जाएगा। दूसरा, भारत किसी भी तरह के परमाणु ब्लैकमेल को बर्दाश्त नहीं करेगा। तीसरा, भारत अब आतंकवादी सरगनाओं और उन्हें शरण देने वाली सरकारों के बीच अंतर नहीं करेगा। प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा, "दुनिया अब इस नए और दृढ़ भारत को पहचान रही है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा और आतंकवाद के प्रति अपने दृढ़ दृष्टिकोण को समायोजित कर रहा है।"

श्री मोदी ने कहा, "ऑपरेशन सिंदूर का प्रत्येक क्षण भारत के सशस्त्र बलों की शक्ति और क्षमता का प्रमाण है", उन्होंने सेना, नौसेना और वायु सेना के बीच असाधारण समन्वय की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनका तालमेल उल्लेखनीय रहा। श्री मोदी ने समुद्र पर नौसेना के प्रभुत्व, सीमाओं पर सेना के सुदृढ़ीकरण और हमले तथा प्रतिरक्षा में भारतीय वायु सेना की दोहरी भूमिका रेखांकित की। उन्होंने सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) और अन्य सुरक्षा बलों की उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सराहना की। श्री मोदी ने भारत की एकीकृत वायु और भूमि युद्ध प्रणालियों की प्रभावशीलता को रेखांकित करते हुए घोषणा की कि यह एकजुटता अब भारत की सैन्य शक्ति

मुख्य बातें

- 'भारत माता की जय' सिर्फ एक नारा नहीं है, यह हर उस सैनिक की शपथ है जो अपने देश के सम्मान और मर्यादा के लिए अपना जीवन दांव पर लगाता है
- जब हमारी बहनों और बेटियों का सिंदूर मिटाया गया, तो हमने आतंकवादियों को उनके ठिकानों में ही कुचल दिया
- आतंक के आकाओं को अब पता है कि भारत के विरुद्ध आंख उठाने से उन्हें विनाश के अलावा कुछ नहीं प्राप्त होगा
- पाकिस्तान में न केवल आतंकवादी ठिकानों और एयरबेसों को नष्ट कर दिया गया, बल्कि उनके दुर्भावनापूर्ण इरादों और दुस्साहस को भी पराजित किया गया
- आतंकवाद के खिलाफ भारत की लक्ष्मण रेखा अब स्पष्ट है, अगर कोई और आतंकी हमला होता है, तो भारत जवाब देगा और यह एक निर्णायक जवाब होगा
- ऑपरेशन सिंदूर का हर क्षण भारत के सशस्त्र बलों की शक्ति का प्रमाण है
- यदि पाकिस्तान आगे कोई आतंकवादी गतिविधि या सैन्य आक्रमण करता है, तो हम निर्णायक जवाब देंगे, यह जवाब हमारी शर्तों पर, हमारे तरीके से होगा
- ये नया भारत है! यह भारत शांति चाहता है, लेकिन अगर मानवता पर हमला होता है, तो भारत युद्ध के मैदान में दुश्मन को कुचलना भी जानता है

की पहचान बन चुकी है।

भारत का मजबूत सुरक्षा कवच एक निर्णायक ताकत

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान सैनिकों और उन्नत सैन्य प्रौद्योगिकी के बीच उल्लेखनीय समन्वय को रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत की पारंपरिक वायु रक्षा प्रणाली जो कई युद्धों की गवाह रही है, को आकाश जैसे स्वदेशी प्लेटफार्मों और एस-400 जैसी आधुनिक, शक्तिशाली प्रणालियों द्वारा सुदृढ़ किया गया है। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत का मजबूत सुरक्षा कवच एक निर्णायक ताकत बन गया है। पाकिस्तान के बार-बार के प्रयासों के बावजूद भारतीय एयरबेस और प्रमुख रक्षा बुनियादी ढांचा पूरी तरह सुरक्षित रहा। प्रधानमंत्री ने इस सफलता का श्रेय सीमा पर तैनात प्रत्येक सैनिक और ऑपरेशन में शामिल प्रत्येक व्यक्ति के समर्पण और वीरता को दिया। उन्होंने उनकी प्रतिबद्धता को भारत की अटूट राष्ट्रीय रक्षा की नींव के रूप में स्वीकार किया।

श्री मोदी ने कहा कि भारत के पास अब अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी है जिसका पाकिस्तान मुकाबला नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि

पिछले एक दशक में भारतीय वायुसेना और अन्य सैन्य शाखाओं ने दुनिया की कुछ सबसे उन्नत रक्षा तकनीकों तक पहुंच प्राप्त कर ली है। श्री मोदी ने माना कि नई तकनीक के साथ महत्वपूर्ण चुनौतियां भी आती हैं और जटिल तथा परिष्कृत प्रणालियों को बनाए रखने और कुशलतापूर्वक संचालित करने के लिए अत्यधिक कौशल एवं सटीकता की आवश्यकता होती है।

आधुनिक युद्धकला में अपनी श्रेष्ठता का प्रदर्शन करते हुए सामरिक विशेषज्ञता के साथ तकनीक को सहजता से एकीकृत करने के लिए भारत के सशस्त्र बलों की सराहना करते हुए श्री मोदी ने घोषणा की कि भारतीय वायुसेना ने अब न केवल हथियारों से बल्कि डेटा और ड्रोन से भी दुश्मनों का मुकाबला करने की कला में महारत हासिल कर ली है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि पाकिस्तान की अपील के जवाब में भारत की सैन्य कार्रवाई को अभी अस्थायी रूप से रोका गया है। उन्होंने जोर देकर कहा कि अगर पाकिस्तान आगे भी कोई आतंकवादी गतिविधि या सैन्य उकसावे में शामिल होता है, तो भारत पूरी शक्ति से जवाब देगा। श्री मोदी ने पुष्टि की कि भारत की प्रतिक्रिया पूरी तरह से अपनी शर्तों पर तय होगी। उन्होंने इस निर्णायक रुख का श्रेय देश के सशस्त्र बलों के साहस, वीरता और सतर्कता को दिया। सैनिकों से उनके दृढ़ संकल्प, जुनून और तत्परता को बनाए रखने का आग्रह करते हुए और इस बात पर जोर देते हुए कि भारत को हर समय सतर्क और तैयार रहना चाहिए, प्रधानमंत्री ने यह घोषणा करते हुए अपनी बात का समापन किया कि यह एक नया भारत है; एक ऐसा भारत जो शांति चाहता है लेकिन अगर मानवता को खतरा है तो वह विरोधियों को कुचलने में तनिक भी संकोच नहीं करेगा। ■

ऑपरेशन सिंदूर
भारत की रणनीतिक स्पष्टता और सुनियोजित सेना

भारतीय सशस्त्र बलों ने 9 आतंकवादी ठिकानों पर समन्वित और सटीक मिसाइल हमले किए; महज तीन घंटे के अंदर भारत ने नूर खान समेत 11 सैन्य ठिकानों रफीकी, मुरीद, सुक्कुर, सियालकोट, पसरूर, चुनियन, सरगोधा, स्कर्दू, भोलारी और जैकोबाबाद को निशाना बनाया

पहलगाम में 22 अप्रैल, 2025 को एक आतंकवादी हमला हुआ। पाकिस्तान समर्थित हमलावरों ने पहलगाम में घुसकर लोगों से उनका धर्म पूछा और उनकी हत्या कर दी। इस बर्बर आतंकी हमले के परिणामस्वरूप 26 लोगों की जान चली गई। इस हमले के खिलाफ अपने जवाब में भारत ने पाकिस्तान के इन दोषी आतंकी ठिकानों को नष्ट करने के लिए 'ऑपरेशन सिंदूर' शुरू किया

ऑपरेशन सिंदूर : एक नजर

- आतंकवाद के विरुद्ध जीरो टॉलरेंस
- 9 मुख्य आतंकवादी ठिकाने नष्ट किये गए
- 11 पाकिस्तानी एयरबेसों को नुकसान पहुंचाया गया
- वांछित और बड़े नाम वाले आतंकवादी मारे गए
- आधुनिक तकनीकी के साथ सधी हुई सटीक कार्रवाई की गई

भारत की लक्ष्य केन्द्रित, नपी-तुली तथा गैर-उकसावे वाली कार्रवाई

भारत ने 7 मई को अपनी पहली प्रेस वार्ता के दौरान ही यह स्पष्ट कर दिया था कि उसकी प्रतिक्रिया लक्ष्य केन्द्रित, नपी-तुली तथा गैर-उकसावे वाली थी। भारत ने स्पष्ट रूप से प्रेस वार्ता में यह उल्लेख किया कि किसी भी पाकिस्तानी सैन्य प्रतिष्ठान को निशाना नहीं बनाया गया था। यह भी दोहराया गया कि भारत में सैन्य ठिकानों पर किसी भी प्रकार के हमले का उचित जवाब दिया जाएगा। विदेश सचिव श्री विक्रम मिस्री ने 8, 9 और 10 मई को कई प्रेस वार्ताओं में भारत की कार्ययोजना तथा पाकिस्तान की साजिशों की पूरी जानकारी मीडिया के सामने रखी।

कार्रवाई की सफलता

ऑपरेशन सिंदूर की प्रभावशीलता को सटीकता के साथ संप्रेषित

किया गया और इसे सनसनीखेज बनाने के बजाय इसके रणनीतिक परिणामों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

अविश्वसनीय स्रोत: भारतीय प्राधिकारी वर्ग ने पाकिस्तान स्थित सोशल मीडिया अकाउंटों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली हेराफेरी की रणनीति का पर्दाफाश किया है, जिनमें से कई अब अंतरराष्ट्रीय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों की जांच के दायरे में आ चुके हैं।

मीडिया साक्षरता को बढ़ावा देना: फर्जी खबरों की पहचान करने के बारे में नागरिकों को जागरुक करने के अभियानों से अधिक लचीला डिजिटल वातावरण बनाने में सहायता मिली है।

पाकिस्तान को सैन्य और असैन्य तरीकों से दंडित किया गया

ऑपरेशन सिंदूर भारत की सैन्य एवं रणनीतिक सामर्थ्य का एक महत्वपूर्ण प्रदर्शन था, जिसे सैन्य और असैन्य साधनों के संयोजन के माध्यम से पूरा किया गया था। इस बहुआयामी कार्रवाई ने आतंकवादी खतरों को प्रभावी ढंग से निष्प्रभावी कर दिया, पाकिस्तानी आक्रामकता को रोका और आतंकवाद के प्रति भारत की कतई बर्दाश्त न करने की नीति को दृढ़ता से लागू किया। इस सैन्य अभियान में अंतरराष्ट्रीय समर्थन व सहयोग के रणनीतिक संयम को बनाए रखा गया।

सैन्य उपाय

- भारत ने अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कई सटीक और सुनियोजित सैन्य कार्रवाइयां कीं।
- भारतीय सशस्त्र बलों ने 9 आतंकवादी ठिकानों पर समन्वित और सटीक मिसाइल हमले किए। इनमें 4 पाकिस्तान में (बहावलपुर तथा मुरीदके सहित) और 5 पाकिस्तान के अवैध कब्जे वाले कश्मीर (जैसे मुजफ्फराबाद व कोटली) में स्थित थे। ये स्थान जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) और लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) के प्रमुख कमांड सेंटर थे, जो पुलवामा (2019) तथा मुंबई (2008) जैसे बड़े हमलों के लिए जिम्मेदार थे।
- पाकिस्तान द्वारा 7, 8 और 9 मई, 2025 को भारतीय शहरों और सैन्य ठिकानों पर ड्रोन तथा मिसाइल हमलों के जवाब में भारत ने लाहौर की वायु रक्षा प्रणाली को निष्क्रिय करने सहित पाकिस्तान की वायु रक्षा क्षमताओं को बेअसर करने के उद्देश्य से कामिकेज ड्रोन तैनात किए।
- भारत की वायु रक्षा प्रणालियों ने आने वाले सभी खतरों को सफलतापूर्वक बेअसर कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप जान-माल का न्यूनतम नुकसान हुआ। इसके विपरीत, पाकिस्तान की एचक्यू-9 वायु रक्षा प्रणाली विफल साबित हुई। 9 और 10 मई, 2025 की रात को भारत का जवाबी हमला एक ऐतिहासिक मील का पत्थर बन गया, जब पहली बार किसी देश ने परमाणु हथियार संपन्न राष्ट्र के हवाई ठिकानों पर सफलतापूर्वक हमला किया।
- महज तीन घंटे के अंदर भारत ने नूर खान समेत 11 सैन्य ठिकानों रफीकी, मुरीद, सुक्कुर, सियालकोट, पसरूर, चुनियन, सरगोधा, स्कर्दू, भोलारी और जैकोबाबाद को निशाना बनाया।
- जकोबाबाद में शाहबाज एयरबेस पर हमले से पहले और बाद की सैटेलाइट तस्वीरें विनाश के पैमाने को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं।
- इस हमले में सरगोधा और भोलारी जैसे प्रमुख गोला-बारूद डिपो तथा एयरबेस को निशाना बनाया गया, जहां एफ-16 व जेएफ-17 लड़ाकू विमान तैनात थे। परिणामस्वरूप, पाकिस्तान की वायु सेना का लगभग 20% बुनियादी ढांचा नष्ट हो गया।
- भोलारी एयरबेस पर बमबारी में स्क्वाड्रन लीडर उस्मान यूसुफ और 4 वायु सैनिकों सहित 50 से अधिक मारे गए। कई पाकिस्तानी लड़ाकू विमान भी नष्ट कर दिए गए।
- ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारत ने पाकिस्तान में कई आतंकवादी ठिकानों और सैन्य ठिकानों पर सटीक हमले किए।
- नियंत्रण रेखा पर पुंछ-राजौरी सेक्टर में पाकिस्तानी तोपखाने व मोर्टार हमलों ने नागरिक क्षेत्रों को निशाना बनाया, जिसके बाद भारतीय सेना ने जवाबी कार्रवाई की और नागरिकों को निशाना बना रहे आतंकवादी बंकरों तथा पाकिस्तानी सेना के ठिकानों को नष्ट कर दिया।
- रहीमयार खान एयरबेस के सुलगते मलबे से बरामद आसिफ अली जरदारी की आधी जली हुई तस्वीर पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय छवि के विनाश का प्रतीक है।

किये गए असैन्य उपाय

- भारत के नॉन-काइनेटिक अर्थात् सीधे हमला न करने के प्रयासों ने रणनीतिक वातावरण को आकार देने और सार्वजनिक तथा अंतरराष्ट्रीय समर्थन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रणनीतिक नीति निर्माण, सूचना प्रभुत्व और मनोवैज्ञानिक कार्रवाइयों के माध्यम से भारत ने पाकिस्तान को कूटनीतिक एवं आर्थिक रूप से अलग-थलग कर दिया है, जबकि घरेलू तैयारी तथा वैश्विक सहयोग को सशक्त किया है।
- ऑपरेशन सिंदूर के तहत एक निर्णायक कदम भारत द्वारा सिंधु जल संधि को समाप्त करना था। इसके पाकिस्तान पर दूरगामी परिणाम प्राप्त हुए, क्योंकि पाकिस्तान अपनी 16 मिलियन हेक्टेयर कृषि भूमि के 80% और कुल जल उपयोग के 93% हिस्से के लिए सिंधु नदी प्रणाली पर बहुत अधिक निर्भर करता है। सिंधु नदी प्रणाली 237 मिलियन लोगों को सहायता प्रदान करती है और गेहूं, चावल तथा कपास जैसी फसलों के माध्यम से पाकिस्तान के सकल घरेलू उत्पाद में एक-चौथाई का योगदान देती है।
- मंगला और तरबेला बांधों की केवल 10% सक्रिय भंडारण क्षमता (14.4 एमएएफ) होने के कारण जल प्रवाह में किसी भी प्रकार की बाधा से कृषि क्षेत्र में विनाशकारी नुकसान, खाद्यान्नों की कमी, प्रमुख शहरों में पानी की कमी और बिजली कटौती

हो सकती है। ये झटके पाकिस्तान की पहले से ही कमजोर अर्थव्यवस्था पर गंभीर प्रभाव डालेंगे और उसे राजकोषीय तथा विदेशी मुद्रा संकट की ओर धकेल देंगे।

- भारत के लिए सिंधु जल संधि ने लंबे समय से जम्मू-कश्मीर में बुनियादी ढांचे के विकास में बाधा उत्पन्न की थी और विभिन्न परियोजनाओं को नदी के बहाव क्षेत्र तक ही सीमित रखा था। इस संधि के निलंबन से भारत को झेलम व चिनाब जैसी पश्चिमी नदियों पर पूरी तरह से नियंत्रण प्राप्त हो गया, जिससे जम्मू और कश्मीर, लद्दाख, पंजाब तथा हरियाणा में नए जलाशयों का निर्माण संभव हो पाया है। इससे सिंचाई एवं जलविद्युत निर्माण को बढ़ावा मिला और एक कूटनीतिक साधन को विकासात्मक परिसंपत्ति में बदल दिया जाएगा। सिंधु जल संधि को निलंबित करके भारत ने एक निर्णायक संदेश दिया है - "खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते।"
- भारत ने अटारी-वाघा सीमा बंद कर दी और पाकिस्तान के साथ सभी द्विपक्षीय व्यापार निलंबित कर दिए हैं। इसने प्याज जैसी प्रमुख खाद्य वस्तुओं के निर्यात को रोक दिया और सीमेंट तथा वस्त्रों के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया है। इस कार्रवाई से दोनों देशों के बीच प्राथमिक भूमि-आधारित व्यापार मार्ग टूट गया, जिससे आर्थिक संबंधों में बड़ी बाधा उत्पन्न हो रही है।
- भारत ने आतंकवाद के विरुद्ध दृढ़ संकल्प प्रदर्शित करते हुए पहलगाम आतंकवादी हमले के तुरंत बाद देश में आये हुए सभी पाकिस्तानियों के वीजा रद्द कर दिए और उन्हें निर्वासित कर दिया।
- पाकिस्तानी कलाकारों पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया और सभी प्रदर्शन, स्क्रीनिंग, संगीत रिलीज तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान स्थगित कर दिए गए। यह प्रतिबंध स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म तक बढ़ा दिया गया है, जिससे भारत में पाकिस्तान का सांस्कृतिक प्रभाव मुख्य रूप से समाप्त हो चुका है।
- वैश्विक मंच पर भारत ने पाकिस्तान के आतंकवादी ढांचे को उजागर किया और कूटनीतिक रूप से उसे अलग-थलग कर दिया।

भारत ने आतंकवाद के विरुद्ध दृढ़ संकल्प प्रदर्शित करते हुए पहलगाम आतंकवादी हमले के तुरंत बाद देश में आये हुए सभी पाकिस्तानियों के वीजा रद्द कर दिए और उन्हें निर्वासित कर दिया

वैश्विक स्तर पर नेतृत्व का प्रदर्शन

इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय संकट के इस महत्वपूर्ण समय में न केवल समाधान की बल्कि उल्लेखनीय नेतृत्व की भी आवश्यकता थी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी इस चुनौती का सामना करने के लिए आगे आए, जिनकी ऑपरेशन सिंदूर में निर्णायक भूमिका रही, जो हाल के इतिहास में भारत की सबसे साहसिक सैन्य प्रतिक्रियाओं में से एक थी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी पूर्व-निर्धारित राजनयिक यात्रा पर विदेश में होने के बावजूद तेजी से कमान संभाली और एक ऐसी प्रतिक्रिया दी, जिसमें रणनीतिक संयम और मुखर कार्रवाई का गजब संतुलन देखने को मिला था। उन्होंने तीव्र कार्रवाई के लिए भारी दबाव के बावजूद उल्लेखनीय स्तर का संयम दिखाया और यह सुनिश्चित किया कि सिंधु जल संधि को निलंबित करने से लेकर सैन्य कार्रवाई तक हर कदम सुनियोजित व सटीक समय पर उठाया जाए।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रणनीतिक योजना और लक्षित प्रतिक्रिया से भारतीय सैन्य ऑपरेशन के ढांचे को रेखांकित किया। उन्होंने भावनात्मक या प्रतिक्रियात्मक हमले में जल्दबाजी करने के स्थान पर पाकिस्तान और उसके आतंकी गुटों को जवाबी कार्रवाई की तैयारी करने से रोकने के हेतु रणनीतिक अप्रत्याशितता बनाई। भारतीय हमले सावधानीपूर्वक आतंकी ढांचे पर केंद्रित थे और उद्देश्य की इस स्पष्टता की सभी दलों द्वारा सराहना की गई, जिसमें विपक्षी नेता श्री पी. चिदंबरम भी शामिल थे, उन्होंने नागरिक क्षेत्रों को पूरी तरह से अलग-थलग छोड़कर केवल नुकसान पहुंचाने वाले आतंकी ठिकानों को निशाना बनाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रशंसा की।
- पाकिस्तान के साथ पूरे घटनाक्रम के दौरान आतंकवाद के खिलाफ केंद्रित उद्देश्य अपरिवर्तित रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दृढ़ और स्पष्ट कार्रवाई करने पर ही ध्यान केंद्रित किया। वैश्विक खतरे के रूप में देखे जाने वाले आतंकवाद के खिलाफ उनके निरंतर प्रयासों से भारत को व्यापक अंतरराष्ट्रीय समर्थन हासिल करने में मदद मिली। उनके नेतृत्व में भारत ने इस सिद्धांत को मजबूती से रखा है कि आतंकवाद और उसके प्रायोजकों के साथ एक जैसा व्यवहार किया जाएगा।
- एक संतुलित, लेकिन शक्तिशाली कार्रवाई के साथ यह भी सुनिश्चित किया गया कि पाकिस्तान की ओर से बार-बार उकसावे के बावजूद पाकिस्तानी नागरिकों को कोई नुकसान न पहुंचे। भारत की सैन्य गतिविधियां आतंकी शिविरों और आतंकवाद को सहायता देने वाली विशिष्ट सैन्य सुविधाओं तक ही सीमित थीं। इस तरह से सावधानीपूर्वक निर्धारित किये गए लक्ष्यों ने भारत की क्षमता और जिम्मेदारी के साथ युद्ध लड़ने के प्रति भारतीय प्रतिबद्धता को दर्शाया है।
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने लंबे समय से चली आ रही चिंताओं को दूर करते हुए सिंधु जल संधि को निलंबित करने का फैसला लिया, जो एक ऐतिहासिक कदम था, जिससे न केवल पाकिस्तान के हितों को नुकसान पहुंचा, बल्कि भारत को इससे लाभ हुआ। उन्होंने एक नया राष्ट्रीय सुरक्षा सिद्धांत स्थापित किया— भविष्य

में होने वाले किसी भी आतंकवादी हमले को युद्ध की कार्रवाई माना जाएगा। इससे आतंकवादियों और उनके राष्ट्रीय प्रायोजकों के बीच का झूठा भेद समाप्त हो गया है।

ऑपरेशन सिंदूर से क्या हासिल हुआ?

1. **नौ आतंकवादी शिविर नष्ट किये गये:** भारत ने पाकिस्तान और पाकिस्तान के अवैध कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर (पीओजेके) में लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद तथा हिजबुल मुजाहिदीन के ठिकानों को निशाना बनाकर नौ प्रमुख आतंकी लॉन्चपैडों को सफलतापूर्वक नष्ट कर दिया।
2. **सीमा पार सटीक हमले:** भारत ने इंगेजमेंट के नियमों को पुनः परिभाषित किया, पाकिस्तान के अंदर घुस कर भीतर तक हमला किया, जिसमें पंजाब प्रांत और बहावलपुर भी शामिल हैं, जिन्हें कभी अमेरिकी ड्रोनों के लिए भी पहुंच से बाहर माना जाता था। भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि यदि आतंकवाद वहां से उत्पन्न होता है तो न तो नियंत्रण रेखा और न ही पाकिस्तानी क्षेत्र कार्रवाई से अछूता रहेगा।
3. **एक नई रणनीतिक लक्ष्मण रेखा:** ऑपरेशन सिंदूर ने एक नई लक्ष्मण रेखा खींच दी है— अगर आतंकवाद किसी देश की नीति है, तो इसका स्पष्ट और सशक्त जवाब दिया जाएगा। इसने निवारण से प्रत्यक्ष कार्रवाई की ओर बदलाव को चिह्नित किया।
4. **आतंकवादियों और उनके प्रायोजकों के लिए समान दंड:** भारत ने आतंकवादियों तथा उनके सहयोगियों के बीच कृत्रिम अलगाव को खारिज कर दिया और दोनों पर एक साथ प्रहार किया। इससे कई पाकिस्तानी आतंकवादियों को मिलने वाली दंडमुक्ति की सुविधा समाप्त हो गई।
5. **पाकिस्तान की वायु रक्षा कमजोरियों का खुलासा:** भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान की चीनी आपूर्ति वाली वायु रक्षा प्रणालियों को दरकिनार कर दिया और उन्हें जाम कर दिया, राफेल जेट, एससीएएलपी मिसाइलों तथा हैमर बमों का उपयोग करके केवल 23 मिनट में मिशन पूरा किया गया, जिससे भारत की तकनीकी बढ़त का प्रदर्शन हुआ।
6. **भारत की वायु रक्षा श्रेष्ठता प्रदर्शित:** भारत की बहुस्तरीय वायु रक्षा प्रणाली ने सैकड़ों ड्रोन और मिसाइलों को मार गिराया। जिसमें स्वदेशी आकाशतीर प्रणाली भी शामिल है। इस बहुस्तरीय व्यवस्था ने उन्नत रक्षा प्रणालियों के निर्यात में भारत की बढ़ती क्षमताओं को भी प्रदर्शित किया।
7. **बिना किसी प्रसार के सटीकता:** भारत ने नागरिक या गैर-आतंकवादी सैन्य स्थलों को लक्ष्य बनाने से परहेज किया, जिससे आतंकवाद के प्रति उसकी जीरो टॉलरेंस का प्रदर्शन हुआ और साथ ही स्थिति को शुद्ध रूप से युद्ध में बदलने से रोका गया।
8. **प्रमुख आतंकवादी कमांडरों का खात्मा:** भारत की मोस्ट वांटेड सूची में शामिल कई हाई-प्रोफाइल आतंकवादियों को एक ही रात में ढेर कर दिया गया, जिससे प्रमुख ऑपरेशनल मॉड्यूल चरमरा गए हैं।
9. **पाकिस्तानी सैन्य प्रतिष्ठानों पर हवाई हमले:** भारत 9-10 मई को एक ही ऑपरेशन में परमाणु हथियार संपन्न देश पाकिस्तान के 11 एयरबेसों पर हमला करने वाला पहला देश बन गया, जिससे पाकिस्तानी वायुसेना की 20% संपत्ति नष्ट हो गई। भूलारी एयरबेस को भारी नुकसान पहुंचा है, जिसमें स्क्वाड्रन लीडर उस्मान यूसुफ की मौत और प्रमुख लड़ाकू विमानों का नष्ट होना शामिल है।
10. **समन्वित त्रि-सैन्य कार्रवाई:** भारतीय सेना, नौसेना और वायु सेना ने पूर्ण समन्वय के साथ काम किया, जिससे भारत की बढ़ती संयुक्त सैन्य शक्ति का प्रदर्शन हुआ।
11. **एक वैश्विक संदेश प्रसारित:** भारत ने दुनिया को दिखा दिया है कि उसे अपने देशवासियों की रक्षा के लिए किसी की अनुमति की आवश्यकता नहीं है। इसने इस तथ्य को पुष्ट किया है कि आतंकवादी व उनके मास्टरमाइंड कहीं भी छिप नहीं सकते हैं और यदि पाकिस्तान जवाबी कार्रवाई करता है, तो भारत निर्णायक जवाबी हमले के लिए बिलकुल तैयार है।
12. **व्यापक वैश्विक समर्थन:** पिछले संघर्षों के विपरीत, इस बार कई वैश्विक नेताओं ने संयम बरतने का आह्वान करने के स्थान पर भारत का समर्थन किया। इस बदलाव ने भारत की बेहतर वैश्विक स्थिति और नैरेटिव कंट्रोल को दर्शाया है।
13. **कश्मीर के कथानक को नए सिरे से गढ़ा गया:** पहली बार भारत की कार्रवाइयों को पूरी तरह से आतंकवाद विरोधी नजरिए से देखा गया, जिसमें कश्मीर मुद्दे को पूरी तरह से हमले की विषय-वस्तु से अलग रखा गया। यह ऑपरेशन सिंदूर की सटीकता और स्पष्टता से ही संभव हुआ है।

निष्कर्ष

पहलगाम हमले पर भारत की कार्रवाई कानूनी और नैतिक आधार पर पूरी तरह से स्पष्ट थी। इतिहास इसे एक सैद्धांतिक व संतुलित जवाबी कार्रवाई के तौर पर याद रखेगा, जो नेतृत्व, नैतिकता एवं रणनीतिक सटीकता से प्रेरित थी। ऑपरेशन सिंदूर ने दक्षिण एशिया के भू-राजनीतिक और सामरिक परिदृश्य को एक नया आकार दिया है। यह केवल एक सैन्य अभियान नहीं था, बल्कि भारत की संप्रभुता, संकल्प और वैश्विक प्रतिष्ठा का बहुआयामी प्रस्ताव था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के निर्णायक नेतृत्व में भारत ने एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया है, जिसमें संयम के साथ सामर्थ्य और सटीकता के साथ उद्देश्य का मिश्रण देखने को मिलता है। भारत ने आतंकी नेटवर्क और उनके राष्ट्रीय प्रायोजकों को अभूतपूर्व स्पष्टता के साथ निशाना बनाकर एक कड़ा संदेश दिया है: आतंकवाद का त्वरित और आनुपातिक जवाब दिया जाएगा, चाहे सीमाएं या कूटनीतिक जटिलताएं कुछ भी हों। ■

मार्शल जिसने दिल जीत लिया

भारतीय सशस्त्र बलों के सैन्य संचालन महानिदेशक (डीजीएमओ) ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में अपने-अपने बल के बारे में जानकारी दी। इस दौरान प्रश्न-उत्तर काल में न्यूज नेशन के पत्रकार मधुरेंद्र ने पूछाः "प्रेस कॉन्फ्रेंस शुरू करने से पहले सेना ने एक वीडियो चलाया, जिसमें राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की पंक्तियां बैकग्राउंड में थीं। कल के वीडियो में शिव तांडव स्तोत्र था। इसके जरिए आप दुश्मन को क्या संदेश देना चाह रहे थे?" एयर मार्शल ए.के. भारती इस सवाल से बेहदर प्रभावित दिखे। उन्होंने पत्रकार का नाम और एजेंसी फिर से पूछी, ताकि इसे नोट किया जा सके। पत्रकार द्वारा बताई गई पंक्तियां राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर के प्रसिद्ध महाकाव्य 'रश्मिरथी' से थीं, खास तौर पर 'कृष्ण की चेतावनी' वाला भाग। पंक्तियां इस प्रकार हैंः

दुर्योधन वह भी दे ना सका,
आशीष समाज की ले ना सका,
उलटे, हरि को बांधने चला,
जो था असाध्य, साधन चला।

(दुर्योधन वह भी नहीं दे सका, वह समाज का आशीर्वाद नहीं ले सका, इसके बजाय, उसने असंभव का प्रयास करते हुए हरि (कृष्ण) को बांधने की कोशिश की।)

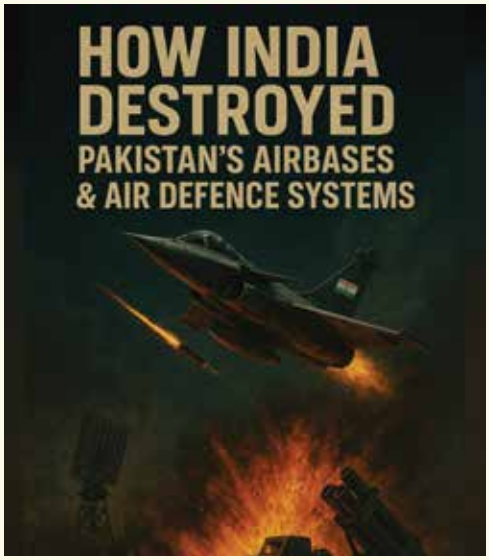

जब नाश मनुज पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है।
हरि ने भीषण हुंकार किया, अपना स्वरूप विस्तार किया।
डगमग-डगमग दिग्गज डोले, भगवान कुपित हो कर बोलें।
जंजीर बढ़ा अब साध मुझसे, हां-हां दुर्योधन! बांध मुझे।

(जब किसी व्यक्ति पर विनाश मंडराता है, तो सबसे पहली चीज जो मरती है वह है ज्ञान। हरि ने भयंकर गर्जना की और अपने दिव्य रूप का विस्तार किया। महान योद्धा कांप गए और लड़खड़ा गए। भगवान ने क्रोधित होकर कहाः अब अपनी जंजीर बढ़ाओ, मुझे बांधो! हां, दुर्योधन! मुझे बांधो!)

इसी सन्दर्भ में प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए ए.के. भारती ने 'रामचरितमानस' की चौपाई के माध्यम से उत्तर दिया। उन्होंने धाराप्रवाह रूप मे कहाः

बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनी दिनी बीति।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति।।

(भगवान् राम ने समुद्र से विनम्र निवेदन किया, लेकिन वह नहीं माना। तीन दिन बीत गए। तब भगवान राम ने क्रोध में भरकर कहाः भय के बिना प्रेम नहीं हो सकता।*) यह तब की बात है जब भगवान राम, समुद्र देवता से लंका जाने का रास्ता देने की प्रतीक्षा कर रहे थे, लेकिन तीन दिन बाद उनका धैर्य जवाब दे गया और वे क्रोधित हो गए। उन्होंने कहा कि भय के बिना प्रेम नहीं होता और उन्होंने अपना धनुष उठा लिया। तभी समुद्र देवता प्रकट हुए और मदद के लिए हाथ बढ़ाया।

आम तौर पर प्रेस कॉन्फ्रेंस में पत्रकार मेहमानों के आने पर जयकारे नहीं लगाते, तालियां नहीं बजाते, यहां तक कि खड़े भी नहीं होते। ऐसा केवल राष्ट्रगान या राष्ट्र गीत के दौरान होता है। खास तौर पर एक गंभीर सैन्य प्रेस कॉन्फ्रेंस में ऐसी प्रतिक्रियाएं दुर्लभ हैं। लेकिन ए.के. भारती के सहज और भावनात्मक शब्दों को सुनने के बाद पत्रकार खुद को तालियां बजाने से रोक नहीं पाए। यहां तक कि नौसेना के वाइस एडमिरल ए.एन. प्रमोद, जो एयर मार्शल भारती के बगल में बैठे थे, एक सौम्य मुस्कान के साथ बैठे नजर आये।

प्रेस कॉन्फ्रेंस खत्म करने से पहले प्रमोद ने एक टिप्पणी कीः 'शं नो वरुणः - एक वैदिक आह्वान जिसका अर्थ है, हे वरुण' (समुद्रों के देवता) हमारे लिए शुभ हों। ■

प्रधानमंत्री मोदीजी के नेतृत्व में भारत की मुखर प्रतिक्रिया

प्रधानमंत्री मोदीजी ने ऑपरेशन सिंदूर का नेतृत्व किया

- प्रधानमंत्री श्री मोदी ने यह सुनिश्चित किया कि पहलगाम हमले का उचित बदला लेने के लिए 'ऑपरेशन सिंदूर' चलाया जाये।
- हमले के समय पूर्व निर्धारित विदेशी यात्रा पर होने के बावजूद उन्होंने तुरंत कार्यभार संभाला और भारत की उचित प्रतिक्रिया की योजना बनाई।

सावधानीपूर्वक योजना और उचित प्रतिक्रिया

- प्रधानमंत्री मोदीजी ने हमले का तत्काल जवाब देने के लिए भारी दबाव के आगे घुटने नहीं टेके।
- उन्होंने सुनिश्चित किया कि 'सिंधु जल संधि' को निलंबित करने से लेकर सैन्य कार्रवाई तक हर कदम सावधानीपूर्वक एवं योजनाबद्ध तरीके से उठाया जाए और उचित समय पर उसे अंजाम दिया जाए।
- पहलगाम हमले के दिन ही, इस बात पर लगभग आम सहमति थी कि भारत हमले का बदला लेगा। इससे यह चिंता पैदा हुई कि पाकिस्तान और आतंकवादी समूह हमले की आशंका को पहले ही भांप लेंगे और प्रभावी ढंग से उसका मुकाबला करेंगे। श्री मोदी ने उचित रणनीति बनायी और यह सुनिश्चित किया कि कोई भी भारत की प्रतिक्रिया की तारीख का अनुमान न लगा सके।
- केवल आतंकवादी ठिकानों पर हमले का ध्यान केंद्रित करने की व्यापक रूप से सराहना की गई है। यहां तक कि पी. चिदंबरम जैसे आलोचक ने भी प्रधानमंत्री की प्रशंसा की और कहा कि उन्होंने बुद्धिमानी से एक संतुलित सैन्य प्रतिक्रिया के विकल्प को चुना, जो केवल उन नौ लक्ष्यों तक सीमित थी, जिनके बारे में माना जाता है कि वे आतंकवादी समूहों के मुख्य ढांचे हैं।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई पर अपना ध्यान केंद्रित किया

- पाकिस्तान के साथ इस पूरे संघर्ष के दौरान प्रधानमंत्री श्री मोदी ने सुनिश्चित किया कि उनका उद्देश्य एक ही रहेः पाकिस्तान को मुखर जवाब।
- वैश्विक समुदाय द्वारा दिया गया समर्थन प्रधानमंत्री श्री मोदी के 'आतंकवाद' को एक वैश्विक चुनौती के रूप में स्थापित करने के निरंतर प्रयासों के कारण ही संभव हो पाया है।

त्वरित-आक्रमण के बजाय मुखर प्रतिक्रिया

- पाकिस्तान की ओर से बार-बार उकसावे और भारत के नागरिकों पर होने वाले हमलों के परिप्रेक्ष्य में प्रधानमंत्री श्री मोदी ने यह सुनिश्चित किया कि भारत किसी भी परिस्थिति में पाकिस्तान के आम नागरिकों पर हमला न करे।

- इस संघर्ष की शुरुआत से ही भारत का दृष्टिकोण एक जैसा रहा है। पिछले कुछ दिनों में हमारी सैन्य कार्रवाई या तो आतंकी ठिकानों या आतंकियों को मदद पहुंचाने वाले पाकिस्तानी सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना बनाकर की गई है।

पुराने ऐतिहासिक मुद्दों का समाधान और भविष्य की तैयारी

- समय-समय पर विभिन्न लोगों ने पक्षपातपूर्ण सिंधु जल संधि पर चिंता जताई थी। इस संधि को स्थगित करना प्रधानमंत्री द्वारा उठाया गया एक ऐतिहासिक कदम था।
- इससे न केवल पाकिस्तान को नुकसान होगा, बल्कि यह हमारे देश के लोगों के लिए भी फायदेमंद साबित होगा।
- प्रधानमंत्री ने एक नया सिद्धांत भी दिया है, जिसमें कहा गया है कि भविष्य में होने वाले किसी भी आतंकी हमले को युद्ध की कार्रवाई माना जाएगा। इसने भविष्य की सभी कार्रवाइयों का स्वरूप निर्धारित कर दिया है और इस धारणा को खत्म कर दिया है कि आतंकवादी और आतंकवाद समर्थकों के बीच कोई अंतर होता है।

भारत हमेशा सही था

- पहलगाम हमले के बाद उत्पन्न स्थिति एक और उदाहरण है जब प्रधानमंत्री श्री मोदी ने यह सुनिश्चित किया कि उनके द्वारा उठाया गया प्रत्येक कदम नैतिक और कानूनी दोनों तरीकों से उचित है।
- इतिहास पहलगाम पर भारत की प्रतिक्रिया को संतुलित एवं सिद्धांतबद्ध जवाब के रूप में याद रखेगा। ■

ऑपरेशन सिंदूर

आतंकवादी जिन्हें भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा मार गिराया गया...

- मुदस्सर खादियन खास (अबू जुंदाल, मुदस्सर) - जम्मू-कश्मीर में कई आतंकी गतिविधियों में शामिल, 2008 मुंबई हमले, भारत, अमेरिका, संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित आतंकवादी
- हाफ़िज़ मुहम्मद जमील - भारत, अमेरिका द्वारा घोषित आतंकवादी
- मोहम्मद यूसुफ़ अज़हर (मोहम्मद सलीम घोसी साहब) - आईसी 814 अपहरण, डैनियल पर्ल हत्या, मुंबई हमला, पठानकोट - पुलवामा हमला - भारत, अमेरिका, संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित आतंकवादी
- खालिद (अबू अकाशा) जम्मू-कश्मीर आतंकी गतिविधियों में शामिल - भारत द्वारा घोषित आतंकवादी
- मोहम्मद हसन खान - नगरोटा हमले में शामिल, भारत द्वारा घोषित आतंकवादी
- अब्दुल मलिक रऊफ़ - जम्मू-कश्मीर में आतंकी हमलों में शामिल - भारत द्वारा घोषित आतंकवादी
- मुदस्सिर अहमद - सोनमर्ग हमले में शामिल - भारत द्वारा घोषित आतंकवादी
- मौलाना अब्दुल रऊफ़ असगर (रऊफ़ अज़हर) - आईसी 814 हमले का मास्टरमाइंड मसूद अजहर का भाई, भारतीय संसद और पठानकोट हमले में शामिल - भारत, अमेरिका, संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित आतंकवादी।

ऑपरेशन सिंदूर
कहानी, सफलता और सीख

एस. गुरुमूर्ति

भारत की अचंभित करने वाली शानदार सैन्य अभियान, ऑपरेशन सिंदूर, जिसे आतंकवादी पाकिस्तान को दंडित करने के लिए अंजाम दिया गया, रक्षा बलों द्वारा सिर्फ़ दो हफ्तों में अत्यंत सटीकता और आत्मविश्वास के साथ योजनाबद्ध और क्रियान्वित किया गया था। मगर इस ज़बरदस्त अभियान को कुछ ही हफ्तों में पूरा करने की क्षमता वर्षों की कठिन मेहनत, हर तरह की रुकावटों और आंतरिक व बाहरी विरोध के बावजूद, धीरे-धीरे विकसित की गयी थी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा रक्षा अवसंरचना को नॉन-कॉन्टैक्ट वॉर मॉडल में बदलने की जो पहल की गई थी, वही शानदार ऑपरेशन सिंदूर की नींव बनी। यह परिवर्तन पहले के पारंपरिक युद्ध मॉडल पर आधारित उरी सर्जिकल स्ट्राइक और बालाकोट हवाई हमले की तुलना में कहीं अधिक प्रभावशाली साबित हुआ।

श्री मोदी ने यह समझ लिया था कि पुराना मॉडल भविष्य में कारगर नहीं होगा। यह मॉडल पाकिस्तान के भीतर गहराई तक हमला करने में सक्षम नहीं था और जब तक ऐसा नहीं होता, भारत आतंकवादी संगठनों को उनकी जड़ में नष्ट नहीं कर सकता। इसी वजह से श्री मोदी ने युद्ध के तरीके को बदलकर नॉन-कॉन्टैक्ट वॉरफेयर अपनाया, जिसका नतीजा ऑपरेशन सिंदूर और उसकी शानदार कामयाबी के रूप में सामने आया।

तमाम सैन्य अवसंरचना और तैयारियों के बावजूद ऑपरेशन सिंदूर को इतनी आसानी से अंजाम देना संभव नहीं होता, यदि श्री मोदी के 10 वर्षों के शासन में भारत के पक्ष में भू-राजनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक माहौल को नाटकीय रूप से बदलने वाले कई सहायक कारक न होते। इसी अवधि में पाकिस्तान की सापेक्षिक गिरावट ने भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

नॉन-कॉन्टैक्ट वॉरफ़ेयर/ गैर-संपर्क युद्ध

नॉन-कॉन्टैक्ट वॉरफेयर क्या है और श्री मोदी ने भारत को इसकी ओर कैसे अग्रसर किया? पाकिस्तान डिफेंस वेबसाइट ने 8 जुलाई, 2020 को इस बारे में लिखा था कि भारत किस तरह नॉन-कॉन्टैक्ट वॉरफेयर की दिशा में आगे बढ़ रहा है। वेबसाइट के मुताबिक़, लंबी दूरी की मिसाइलों, अत्याधुनिक सटीक हथियारों, मानव रहित प्रणालियों, रोबोट्स और उपग्रहों को सेना में शामिल करना, जो ख़ासकर तकनीक पर आधारित हैं और जिनका उद्देश्य दूर से ही विध्वंसक शक्ति पहुंचाकर तेज़ और निर्णायक जीत हासिल करना है इसी को 'नॉन-कॉन्टैक्ट वॉरफेयर' या 'गैर-संपर्क युद्ध' कहा जाता है। पाकिस्तानी वेबसाइट ने आगे लिखा, "यह अवधारणा हाल ही में भारतीय रणनीतिक समुदाय में लोकप्रिय हुई है।" इसमें आगे जोड़ा गया, "बालाकोट हमले और इससे पहले [भारत द्वारा] किए गए कथित सर्जिकल स्ट्राइक के दावों से यह साफ़ होता है कि भारत बिना किसी हताहत के मनोवैज्ञानिक बढ़त हासिल करना चाहता है, और साथ ही हिंसा की बढ़ोतरी से भी बचना चाहता है। जनवरी, 2015 में भी भारतीय थलसेना प्रमुख ने दोहराया था कि नॉन-कॉन्टैक्ट वॉरफेयर 'महत्वपूर्ण' है और भारतीय सेना के पुनर्गठन की योजना में यह एक 'प्रमुख विचार' है।" 2020 की अपनी पोस्ट में पाकिस्तानी वेबसाइट ने भारतीय सेना प्रमुख द्वारा 2015 में 'नॉन-कॉन्टैक्ट वॉरफ़ेयर/गैर-संपर्क युद्ध' की अवधारणा का उल्लेख करते हुए उसे 'हाल ही में' कही गई बात के रूप में प्रस्तुत किया!

ऑपरेशन सिन्दूर — गैर-संपर्क युद्ध मॉडल

ऑपरेशन सिंदूर की नींव पांच अत्याधुनिक सुपरटेक नॉन-कॉन्टैक्ट युद्ध उपकरणों पर टिकी थी, जिनकी मदद से ज़मीनी सेना या पारंपरिक हवाई हमलों की ज़रूरत नहीं पड़ी। ये पांच हैं— पहला, राफेल लड़ाकू विमान, दूसरा— स्कैल्प मिसाइल, तीसरा— हैमर मिसाइल,चौथा— इजरायली सहयोग से विकसित कामिकाज़े लूटिरिंग ड्रोन और पांचवां—घातक ब्रह्मोस मिसाइल। ये सभी उपकरण नॉन-कॉन्टैक्ट और स्वायत्त हैं; एक बार छोड़े जाने के बाद ये अपने लक्ष्य को ख़ुद ही खोजकर निशाना बनाते हैं।

भारतीय वायुसेना ने ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम देने के लिए राफेल लड़ाकू विमानों का इस्तेमाल किया। भारत को अपने राफेल विमानों पर अत्याधुनिक हथियार प्रणालियां प्रायः स्कैल्प और हैमर मिल गई थीं। इन मिसाइलों के संयोजन से बहुत अंदर तक हमला करना और सटीक निशाना साधना संभव हो गया। स्कैल्प मिसाइल चुपचाप उड़कर 500 किलोमीटर दूर स्थित बंकरों और कमांड सेंटर्स जैसे मज़बूत और दूरस्थ लक्ष्यों को अपना निशाना बना सकती है। हैमर एक एयर-टू-ग्राउंड हथियार है, जो चलते-फिरते लक्ष्यों को भी सटीकता से मार

गिराने में महारत रखती है।

ऑपरेशन सिंदूर में हैमर मिसाइलों ने स्कैल्प मिसाइलों की मदद की। कामिकाज़े ड्रोन 'करो या मरो' किस्म के ड्रोन हैं, जिन्हें इंसान दूर से नियंत्रित करता है। और आख़िरी में घातक ब्रह्मोस मिसाइल, जो स्वदेशी सीकर उपकरण से सुसज्जित है जो इसे लक्ष्य तक पहुंचाती है, जिसने ऑपरेशन सिंदूर में आतंकवादियों के ठिकानों को नेस्तनाबूद कर दिया। 6-7 मई की रात को भयंकर भारतीय हमले के बाद 7 से 9 मई की रात तक पाकिस्तानी ड्रोन और मिसाइल हमलों को नाकाम बनाने वाली सबसे महत्वपूर्ण वायु रक्षा उपकरण रूसी एस-400 मिसाइल रोधी रक्षा प्रणाली थी।

नॉन-कॉन्टैक्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर: श्री मोदी की योजना

श्री मोदी ने फ्रांस से राफेल और हैमर मिसाइलें, इंग्लैंड से स्कैल्प मिसाइल, इज़रायल से हेरॉन Mk2 यूएवी और हारोप ड्रोन की तकनीक, रूस से S-400 मिसाइल इंटरसेप्टर, अमेरिका से AH-64 अपाचे अटैक हेलीकॉप्टर और AGM-114 हेलफायर मिसाइलें हासिल कीं। मोदी सरकार ने इसके अलावा कई अन्य तकनीकों और उपकरणों की भी गुप्त रूप से ख़रीदारी की।

श्री मोदी ने जिन दो उपकरणों को तमाम मुश्किलों और विरोध के बावजूद खरीदा, वो राफेल लड़ाकू विमान और रूसी S-400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम था। राफेल लड़ाकू विमानों के बिना ऑपरेशन सिंदूर के तहत नॉन-कॉन्टैक्ट युद्ध के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता था। वहीं, रूसी S-400 सिस्टम के बिना भारत 7, 8 और 9 मई को पाकिस्तान द्वारा भारतीय रक्षा और वायु ठिकानों पर किए गए लगातार ड्रोन और मिसाइल हमलों को नाकाम नहीं कर पाता। इन दिनों में पाकिस्तानी मिसाइलों को आसमान में पक्षियों की तरह मार गिराया गया।

श्री मोदी ने अमेरिका को नज़रअंदाज़ किया, राहुल की कांग्रेस का डटकर सामना किया

राफेल लड़ाकू विमान और रूसी S-400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम— इन दोनों प्रमुख रक्षा संपत्तियों की खरीद के लिए श्री मोदी को भारी विरोध का सामना करना पड़ा, लेकिन इन्हीं ने ऑपरेशन सिंदूर और उसके बाद की सफलता को ऐतिहासिक बना दिया। ऐसा लगता था मानो देश के खिलाफ कोई साजिश रची जा रही हो, क्योंकि कांग्रेस ने राफेल जेट की खरीद का जबरदस्त विरोध किया और भ्रष्टाचार के आरोप लगाकर उसे रोकने की कोशिश की।

सौभाग्यवश, सुप्रीम कोर्ट ने हस्तक्षेप किया और राफेल सौदे को मंजूरी दी। 2019 के चुनाव नज़दीक आने के बावजूद श्री मोदी ने राफेल ख़रीदने का सबसे बड़ा राजनीतिक जोखिम उठाया, जिसने आज भारत को सुरक्षित किया। अगर राफेल नहीं होते, तो हमारी रक्षा सेनाएं बिना सीमा पार किए, 250 किलोमीटर दूर आतंकवादी शिविरों को निशाना बनाकर नेस्तनाबूद करने के लिए स्वायत्त ड्रोन और मिसाइलें दागने में सक्षम नहीं होतीं जो नॉन-कॉन्टैक्ट वॉरफेयर का असली सार है।

अगर राहुल गांधी राफेल सौदे को रोकने पर अड़े थे, तो अमेरिका भारत को रूस से S-400 खरीदने से रोकने के लिए पूरी तरह से दृढ़ था। अमेरिका ने धमकी दी थी कि अगर भारत ने रूस के साथ S-400 सौदा किया, तो उस पर तकनीकी प्रतिबंध लगा दिए जाएंगे। लेकिन श्री मोदी ने अपने दोस्त ट्रंप की धमकियों के आगे झुकने के बजाय 2018 में S-400 खरीदने का फैसला लिया। इन्हीं S-400 सिस्टम ने जब तीनों सेनाओं ने नौ आतंकी ठिकानों पर हमला किया, उसके बाद पाकिस्तान द्वारा दागे गए सैकड़ों मिसाइलों और ड्रोन को हमारी सीमा में न घुसने देकर तबाह कर दिया। अगर श्री मोदी ने चुनाव से पहले कांग्रेस के दबाव में आकर राफेल लड़ाकू विमान नहीं खरीदे होते, या ट्रंप की धमकी के आगे झुककर S-400 एंटी-मिसाइल सिस्टम की खरीद रद्द कर दी होती, तो भारत ऑपरेशन सिंदूर के बारे में सोच भी नहीं सकता था।

श्री मोदी के आत्मनिर्भरता से कामिकेज़ ड्रोन मिले

यह कहानी तब तक पूरी नहीं होती जब तक श्री मोदी की महत्वाकांक्षी आत्मनिर्भर भारत पहल के तहत रक्षा उत्पादन को स्वदेशी

बनाने के उनके प्रयासों की सराहना न की जाए। श्री मोदी ने केवल बेहतरीन उपकरणों का आयात करने तक ही खुद को सीमित नहीं रखा, बल्कि देश में ही नई तकनीकों के विकास को भी प्रोत्साहित किया। हमारा देश, जो 2014 में अपनी ज़रूरतों का 32% उत्पादन करता था, अब 88% उत्पादन करता है।

कामिकेज़ ड्रोन के बारे में दो शब्द

इज़रायली तकनीक को स्वदेशी कामिकाज़े ड्रोन के रूप में विकसित किया गया और पिछले साल अप्रैल में भारत के 78वें स्वतंत्रता दिवस से पहले रक्षा बलों में शामिल किया गया। नेशनल एयरोस्पेस लैबोरेटरीज (NAL) ने इस स्वदेशी कामिकाज़े ड्रोन का निर्माण किया, जो भारत की रक्षा तकनीक में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। ये 'करो या मरो' प्रकार के मानव रहित हवाई वाहन, घरेलू निर्मित इंजन से लैस, 1,000 किलोमीटर तक उड़ान भर सकते हैं और नौ घंटे तक लक्ष्य क्षेत्र में घूमाकर निगरानी कर सकते हैं। स्वदेशी कामिकाज़े ड्रोन ने ऑपरेशन सिंदूर में अपनी पहली भूमिका निभाई।

श्री मोदी और भारत का भू-राजनीतिक उदय

भारत के लिए सीमा पार कर पाकिस्तान पर हमला करना सिर्फ सैन्य तैयारियों से संभव नहीं था। जब श्री मोदी ने प्रधानमंत्री पद संभाला, तब उन्हें देश में अपने विरोधियों द्वारा फैलाए गए नकारात्मक प्रचार और उनके विदेशी उदारवादी समर्थकों के सक्रिय सहयोग से बनी गलत छवि का सामना करना पड़ा। उन्होंने उस उदारवादी दुनिया से मुकाबला करने की कसम खाई, जो उनसे लगभग नफरत करती थी।

कोई और व्यक्ति ऐसी प्रतिकूल राय का सामना करता तो शायद वैश्विक पीआर एजेंसी की मदद लेता और भारी खर्च करता, ताकि अपने खिलाफ बनी नकारात्मक छवि को कुछ हद तक सुधार सके। लेकिन श्री मोदी ने यह तय किया कि वे अपने बारे में फैली गलत धारणाओं को खुद अपने प्रयासों से बदलेंगे, और वह भी सबसे अनोखे तरीके से। उन्होंने किसी भी नेता की तुलना में सबसे अधिक विदेश यात्राएं कीं। दस वर्षों में उन्होंने 73 देशों का दौरा किया। उन्होंने इज़राइल की यात्रा की, जो सात दशकों तक भारत के लिए एक उपेक्षित राष्ट्र रहा था और जिसे पहले किसी भी भारतीय प्रधानमंत्री ने नहीं देखा था। आज, इज़राइल भारत का सबसे करीबी सहयोगी बन गया है।

इंदिरा गांधी के बाद ऑस्ट्रेलिया जाने वाले वे पहले प्रधानमंत्री थे। अब यह पश्चिमी देशों से निपटने के लिए भारत का एक बड़ा सहयोगी है। मई 2025 तक श्री मोदी ने 41 देशों की एक-एक बार यात्रा की है, 14 देशों में दो बार गए हैं। ब्रिटेन और सऊदी अरब सहित आठ देशों में तीन बार, श्रीलंका में चार बार, चीन सहित तीन देशों में पांच बार, जर्मनी में छह बार, जापान, रूस और यूएई में सात बार, फ्रांस में आठ बार और अमेरिका में दस बार यात्रा की हैं। ये यात्राएं केवल औपचारिक कूटनीतिक दौरे नहीं थीं, बल्कि उन्होंने हर देश के साथ मजबूत और व्यक्तिगत संबंध बनाए।

मई 2025 तक मोदी ने 41 देशों की एक-एक बार यात्रा की है, 14 देशों में दो बार गए हैं। ब्रिटेन और सऊदी अरब सहित आठ देशों में तीन बार, श्रीलंका में चार बार, चीन सहित तीन देशों में पांच बार, जर्मनी में छह बार, जापान, रूस और यूएई में सात बार, फ्रांस में आठ बार और अमेरिका में दस बार यात्रा की हैं

उनकी लगन और व्यक्तिगत कूटनीतिक पहल ने उन्हें अधिकांश देशों से परिचित कराया और वे दुनिया के सबसे प्रभावशाली नेताओं और सुदूर देशों के भी दोस्त बन गए। कई बड़े वैश्विक नेता उनके प्रशंसक बन गए। कुछ उदाहरण ये हैं, पूर्व इज़रायली प्रधानमंत्री बेनेट ने कहा कि श्री मोदी इज़रायल में सबसे लोकप्रिय व्यक्ति हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने श्री मोदी को शानदार, बेहतरीन और 'टोटल किलर' बताया। ट्रंप के पूर्ववर्ती जो बाइडेन ने कहा कि उन्हें 'मोदी का ऑटोग्राफ लेने का मन करता है।' रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने कहा, 'मोदी एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं।'

उन्हें फैसले लेने के लिए डराया या दबाया नहीं जा सकता। मैं तो यहां तक हैरान हूं कि वे भारत के राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए कितनी सख्त स्थिति अपनाते हैं।" इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी ने कहा, "मोदी दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता हैं।" ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री अल्बानीज ने उन्हें 'बॉस' कहा। ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने अपनी किताब 'Unleashed' में लिखा कि मोदी बदलाव लाने वाले नेता हैं और पहली मुलाकात के दौरान उन्होंने मोदी के भीतर एक अनोखी ऊर्जा महसूस की थी।

श्री मोदी को 21 देशों द्वारा उनके सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित किया गया, जिनमें सऊदी अरब, अफगानिस्तान, यूएई, बहरीन, मिस्र, कुवैत (ये सभी मुस्लिम देश हैं), अमेरिका, फ्रांस, रूस और ग्रीस शामिल हैं। इतनी बड़ी संख्या में देशों द्वारा किसी भी अन्य विश्व नेता को यह सम्मान नहीं मिला।

2019 से अमेरिका की मॉर्निंग कंसल्ट सर्वे में श्री मोदी लगातार हर तिमाही दुनिया के सबसे प्रशंसित नेता बने रहे, जिनकी स्वीकृति रेटिंग 70% से भी अधिक रही।

जब श्री मोदी विदेश यात्राओं के जरिए भारत की छवि को मजबूत बनाने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहे थे, तब कांग्रेस पार्टी ने उन्हें 'नॉन-रेजिडेंट प्राइम मिनिस्टर' कहकर तंज कसना शुरू कर दिया। इसके विपरीत, राहुल गांधी ने चार सालों में ख़ामोशी से 247 बार विदेश यात्रा की। यहां तक कि उनकी पार्टी को भी कई बार पता नहीं होता था कि वे कहां हैं और भारत में हैं भी या नहीं।

श्री मोदी का उदय और भारत का उत्थान एक-दूसरे के पूरक थे। उनकी यात्राओं और उनके द्वारा अर्जित की गई प्रसिद्धि ने भारत को ऐसी तकनीक, व्यापारिक निवेश और सैन्य उपकरण दिलाए, जो उनकी अभूतपूर्व वैश्विक पहुंच के बिना आसानी से उपलब्ध नहीं हो सकते थे।

एक वैश्विक नेता के रूप में श्री मोदी का भू-राजनीतिक उत्थान ही वह कारण बना, जिसने भारत को पाकिस्तान के ऊपर खड़ा कर दिया, जबकि पाकिस्तान श्री मोदी और भारत के उत्थान के सामने बौना साबित हुआ। जब श्री मोदी के नेतृत्व में बालाकोट पर गुप्त हवाई हमला किया गया था, तब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समर्थन सीमित और विरोध भी खुलकर सामने आया था, लेकिन इस बार उन्होंने खुलेआम ऑपरेशन सिंदूर की घोषणा की और सीमा पार कर पाकिस्तान पर जबरदस्त हमला बोला।

मगर तुर्की को छोड़कर किसी भी मुस्लिम देश ने पाकिस्तान का साथ नहीं दिया। कतर, जो अब तक पाकिस्तान के साथ था, उसने भी इस बार भारत का साथ दिया। भारत वैश्विक समर्थन के बिना ऑपरेशन सिंदूर नहीं चला सकता था।

भारत का फ्रैजाइल 5 से सुपर 4 तक का सफर, पाकिस्तान 10 पायदान पीछे

श्री मोदी के शासनकाल में भारत का उत्थान इतना प्रभावशाली रहा कि पाकिस्तान वैश्विक मंच पर लगभग अप्रासंगिक हो गया और इससे अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था भी भारत के पक्ष में बदल गई। जब श्री मोदी ने प्रधानमंत्री पद संभाला था, तब भारत को दुनिया की 'फ्रैजाइल 5' अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाता था। आज भारत दुनिया की शीर्ष चार अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है और उसकी विकास दर सबसे अधिक है। 2024 में भारत की जीडीपी 3.88 ट्रिलियन डॉलर थी। पाकिस्तान 0.37 ट्रिलियन डॉलर पर पीछे है, भारत से 10 कदम नीचे। श्री मोदी के शासन के दौरान भारत ने अपनी जीडीपी दोगुनी कर ली। लंबे समय से चल रहे मैक्रोइकोनॉमिक संकट में फंसे पाकिस्तान की स्थिति भी इससे कहीं बेहतर नहीं है। 2024 में भारत ने 8.2% की वृद्धि दर्ज की जो पाकिस्तान के 2.4% से तीन गुना ज़्यादा है। पिछले दशक में भारत की प्रति व्यक्ति जीडीपी में 74% की वृद्धि हुई, जबकि पाकिस्तान की वृद्धि दर धीमी रही। भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 676 बिलियन डॉलर है, जबकि पाकिस्तान का सिर्फ़ 9 बिलियन डॉलर है। भारत सबसे तेज़ी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था है।

इसके विपरीत, पाकिस्तान 1980 के बाद से अब तक 20 से अधिक बार IMF (अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष) के दरवाजे पर आर्थिक मदद के लिए पहुंच चुका है। हाल ही में पाकिस्तान को मिला 7 अरब डॉलर का IMF बेलआउट उसकी इतिहास की सबसे बड़ी आर्थिक राहतों में से एक है। ये राहत पैकेज आर्थिक स्थिरता के लिए दिए जाते हैं, लेकिन अक्सर इनका इस्तेमाल उसकी सेना द्वारा किया जाता है, जो आतंकवाद के साथ जुड़ी रही है। इन तुलनात्मक आंकड़ों का ही असर था कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान विभिन्न देशों का भारत के प्रति रुख सकारात्मक रहा।

ऑपरेशन सिंदूर— मुख्य बातें अथवा निष्कर्ष

ऑपरेशन सिंदूर ने भारत को भारत-पाकिस्तान सीमा पर नियम निर्धारित करने वाला प्रमुख शक्ति केंद्र बना दिया। इसके कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष हैं। पहला, भारत ने पहलगाम नरसंहार का बदला नौ आतंकवादी ठिकानों पर बड़े पैमाने पर मिसाइल हमलों के जरिए लिया, जिन्हें पाकिस्तान रोक नहीं सका और इस बार इन हमलों को स्वीकार करना पड़ा, जबकि पहले वह हमेशा इनकार करता था। दूसरा, पाकिस्तान, जिसने भारत के आतंकवाद पर हमले के बाद युद्ध शुरू किया, अपनी मिसाइलों के जरिए भारत की वायु रक्षा प्रणाली को भेद नहीं पाया। तीसरा, भारतीय सेनाओं ने पाकिस्तान की वायु रक्षा प्रणालियों को तबाह कर दिया और साथ ही उसके एयरबेसों पर भी निर्भीक होकर हमला किया और भारी-भरकम नुकसान पहुंचाया। चौथा, जब पूरी तरह से पराजित पाकिस्तान ने परमाणु हमले की धमकी दी, तो भारत ने उसका मजाक उड़ाया और पाकिस्तान को अपने सैन्य संचालन महानिदेशक के माध्यम से युद्धविराम की भीख मांगनी पड़ी। पांचवां, भारत ने खुलकर घोषणा की कि भविष्य में अगर कोई आतंकी हमला होता है, तो वह उसे युद्ध की घोषणा मानेगा और पाकिस्तान के भीतर जाकर आतंकवादी संगठनों का पीछा करेगा। छठा, पाकिस्तान के सैन्य कमांडरों द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वांछित आतंकवादियों के अंतिम संस्कार में शामिल होकर उन्हें श्रद्धांजलि देना, इस बात का ठोस सबूत है कि उसकी सेना और आतंकवाद के बीच गहरा संबंध है। सातवां, प्रधानमंत्री ने राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में पाकिस्तान और दुनिया को स्पष्ट संदेश दिया कि 'आतंक और वार्ता' तथा 'व्यापार और वार्ता' साथ-साथ नहीं चल सकते। आठवां, प्रधानमंत्री ने यह भी साफ कर दिया कि अब पाकिस्तान से कोई भी बातचीत केवल पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (PoK) पर ही होगी। नौवां, प्रधानमंत्री ने यह भी स्पष्ट रूप से कहा कि 'खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते', यानी सिंधु नदी का जल प्रवाह अब पाकिस्तान द्वारा आतंकवाद छोड़ने से जुड़ा रहेगा। दसवां, श्री मोदी ने पाकिस्तान को चेतावनी दी कि जब तक वह आतंकवाद का समर्थन नहीं छोड़ता, तब तक वह खुद आतंकवाद से तबाह हो जाएगा और आखिर में श्री मोदी ने साफ कर दिया कि भारत अब परमाणु धमकी को बर्दाश्त नहीं करेगा, जिससे संकेत मिलता है कि भारत अपनी पहले इस्तेमाल नहीं करने की नीति पर पुनर्विचार कर सकता है।

संक्षेप में 'ऑपरेशन सिंदूर' ने भारत-पाकिस्तान संबंधों को चाहे युद्ध हो या शांति दोनों ही संदर्भों में पुनर्परिभाषित कर दिया है। ■

(लेखक 'तुगलक' तमिल पत्रिका के संपादक और विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन स्ट्रेटेजिक थिंक टैंक के अध्यक्ष हैं)

ऑपरेशन सिंदूर

आंसुओं से तूफान तक—एक निडर भारत का उदय

डॉ. निरंजन बी. पूजार

एक समय था जब भारत की धरती पर होने वाले हर आतंकवादी हमले की प्रतिक्रिया में केवल आंसू, टीवी पर निंदा और कूटनीतिक औपचारिकताओं को निभाया जाता था, लेकिन वे दिन अब खत्म हो गये हैं। आज भारत केवल शोक नहीं मनाता। यह सटीकता, शक्ति और उद्देश्य के साथ जवाबी कार्रवाई करता है। ऑपरेशन सिंदूर इस परिवर्तन का एक ऐतिहासिक प्रमाण है— दुनिया के लिए यह एक घोषणा है कि अब भारत न केवल अपनी रक्षा करेगा, बल्कि आतंकवाद की जड़ों पर प्रहार भी करेगा, चाहे वे कहीं भी मौजूद हों।

सैन्य और सामरिक कौशल का अभूतपूर्व प्रदर्शन करते हुए भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' को अंजाम दिया— एक ऐसा नाम जो अब वैश्विक सैन्य इतिहास में दर्ज हो गया है। पहली बार, किसी राष्ट्र ने इतनी हिम्मत, सटीकता और दृढ़ संकल्प के साथ एक परमाणु-सशस्त्र राष्ट्र पर हमला किया और उसे नुकसान पहुंचाया है। शांति और सहिष्णुता की भूमि भारत ने अब अपना विराट रूप दिखाया है।

भारत का कहर

पिछले कुछ दिनों में जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा जैसे संगठनों के 100 से ज्यादा मोस्ट वांटेड आतंकवादियों को मार गिराया गया है। पाकिस्तान की सीमा के भीतर नौ बड़े आतंकवादी शिविर और कमांड मुख्यालय नष्ट कर दिए गए हैं। नूर खान (इस्लामाबाद), रफीकी, सरगोधा, स्कार्दू (एक उच्च ऊंचाई वाला लॉन्चपैड), रावलपिंडी, सियालकोट, जैकबाबाद और चुनियान जैसे रणनीतिक सैन्य ठिकानों को भारत की गोलाबारी में भारी नुकसान हुआ।

भारत के हवाई सुरक्षा कवच, जिसका नेतृत्व स्वदेशी आकाश प्रणाली और विश्व स्तर पर प्रसिद्ध एस-400 कर रहे थे, के सामने हजारों ड्रोन और पाकिस्तान के फतेह-2 जैसे उच्च तकनीक वाले मिसाइल सिस्टम बेअसर हो गए। चीन निर्मित एचक्यू-9 सिस्टम और अमेरिकी एफ-16—जो पाकिस्तान की विदेशी सैन्य निर्भरता के प्रतीक हैं— भारतीय संयुक्त सैन्य अभियानों की सटीकता और समन्वय के सामने बेअसर दिखे।

> आज भारत केवल शोक नहीं मनाता। यह सटीकता, शक्ति और उद्देश्य के साथ जवाबी कार्रवाई करता है। ऑपरेशन सिंदूर इस परिवर्तन का एक ऐतिहासिक प्रमाण है - दुनिया के लिए यह एक घोषणा है कि अब भारत न केवल अपनी रक्षा करेगा, बल्कि आतंकवाद की जड़ों पर प्रहार भी करेगा, चाहे वे कहीं भी मौजूद हों

एक हमले से कहीं अधिक – एक रणनीतिक संदेश

यह ऑपरेशन सिर्फ बदला लेने के लिए नहीं था। यह एक घोषणा थी कि भारत की 'जीरो टॉलरेंस' नीति कूटनीतिक शब्दावली नहीं बल्कि एक सैन्य सिद्धांत है। यह एक स्पष्ट संदेश भेजने जैसा था – 'भारतीय रक्त की हर बूंद के लिए परिणामों की बाढ़ होगी।' अब भारत अंतरराष्ट्रीय सहानुभूति या प्रतिबंध का इंतजार नहीं करेगा; यह भौगोलिक स्थिति से परे राष्ट्रीय हित में काम करेगा।

'ऑपरेशन सिंदूर' परमाणु हथियारों के भय से हमला न करने वाली बात के एकदम विपरीत भारत के साहस का प्रतीक है। दशकों से पाकिस्तान परमाणु हथियार की आड़ में सीमा पार आतंकवाद को बढ़ावा देता आया है और इसका उपयोग एक ढाल कर रहा था, लेकिन अब उस धोखे का पर्दाफाश हो चुका है। भारत दुनिया का पहला ऐसा देश बन गया है जिसने आतंकवाद को लगातार प्रायोजित करने के लिए किसी परमाणु संपन्न देश को सीधे तौर पर दंडित किया है। सिर्फ यही बात वैश्विक रणनीतिक गणित को बदल देती है।

रणनीतिक संयम से निर्णायक जवाबी कार्रवाई तक

कभी अपने 'रणनीतिक संयम' के लिए पहचाने जाने वाले भारत ने अब एक नया मॉडल अपनाया है – 'रणनीतिक आक्रामकता'। यह लापरवाही से की जाने वाली कार्रवाई नहीं, बल्कि एक नपा-तुला संकल्प है। इस ऑपरेशन में भारतीय सेना, नौसेना और वायु सेना ने समन्वय दिखाया, जो स्वदेशी तकनीकों और अगली पीढ़ी के युद्ध प्रणालियों से लैस थी। हमारी खुफिया जानकारी, परिचालन समन्वय और राजनीतिक इच्छाशक्ति का परिणाम ही था - एक ऐसी कार्रवाई जो आधुनिक सैन्य इतिहास में शायद ही कभी देखा गया हो।

इसके अलावा, भारत के स्वदेशी शस्त्रागार में मौजूद आकाश मिसाइल, ब्रह्मोस क्रूज मिसाइल, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली, उपग्रह-निर्देशित सटीक हमला करने वाली प्रणाली ने

पूरी दक्षता के साथ काम किया। यह 'आत्मनिर्भर भारत' की कार्रवाई थी और इसने साबित कर दिया कि भारत को अब अपनी संप्रभुता की रक्षा करने के लिए दूसरों पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है।

विश्व को संदेश: शक्ति के साथ शांति

भारत हमेशा शांति के पक्ष में खड़ा रहा है। बुद्ध से लेकर गांधी तक, इस भूमि ने विनाश के बजाय संवाद की वकालत की है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि भारत आतंक के आगे झुक जाएगा। ऑपरेशन सिंदूर का संदेश सरल है – 'हम शांति चाहते हैं, लेकिन हम युद्ध के लिए भी तैयार हैं। हम पहले हमला नहीं करेंगे, लेकिन अगर उकसाया गया तो हम पीछे नहीं हटेंगे'।

यह सिर्फ एक ऑपरेशन या एक दुश्मन के खिलाफ कार्रवाई नहीं है। यह वैश्विक व्यवस्था में भारत के स्थान को फिर से परिभाषित करने के बारे में है। भारत अब एक कमजोर राष्ट्र नहीं है; यह एक संप्रभु सभ्यता-राष्ट्र है, जो अपनी सीमाओं और अपने लोगों की रक्षा करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ प्रहार करने को तैयार है। जो लोग भारत की खामोशी को उसकी कमजोरी समझते हैं, उन्हें अब एक नई वास्तविकता का सामना करना होगा।

भारत का उत्थान

ऑपरेशन सिंदूर सिर्फ एक सैन्य सफलता नहीं है— यह एक सभ्यतागत प्रतिक्रिया है। एक नया भारत उभर रहा है— जो संघर्ष नहीं चाहता, लेकिन उससे डरता भी नहीं है। जो अब रोता नहीं बल्कि अपने पूर्वजों की शक्ति के साथ दहाड़ता है। अतीत के दुःखों की राख से अब एक संप्रभु ज्वाला प्रज्वलित हो रही है— एक ज्वाला जो कहती है: भारत अब कभी भी पीड़ित नहीं होगा।

'भारत ने विश्व को अपना विराट रूप दिखा दिया है— एक शांतिपूर्ण राष्ट्र जो सद्भावना से रहने को तैयार है, लेकिन यदि इसकी संप्रभुता को चुनौती दी गई तो आग से झुलसने को भी पूरी तरह तैयार है।' ■

प्रधानमंत्री ने केरल में विझिंजम अंतरराष्ट्रीय बंदरगाह राष्ट्र को समर्पित किया

पिछले 10 वर्षों में भारत के प्रमुख बंदरगाहों ने जहाजों के टर्न-अराउंड समय को 30 प्रतिशत तक कम कर दिया है

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दो मई को केरल के तिरुवनंतपुरम में 8,800 करोड़ रुपये की लागत वाले विझिंजम अंतरराष्ट्रीय डीपवाटर बहुउद्देशीय बंदरगाह को राष्ट्र को समर्पित किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि विझिंजम डीप-वाटर सी पोर्ट अब नए युग के विकास का प्रतीक बन गया है। श्री मोदी ने इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए केरल और पूरे देश के लोगों को बधाई दी।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर देते हुए कि विझिंजम डीप-वाटर सी पोर्ट को 8,800 करोड़ रुपये की लागत से विकसित किया गया है, कहा कि आने वाले वर्षों में इस ट्रांसशिपमेंट हब की क्षमता तीन गुनी हो जाएगी, जिससे दुनिया के कुछ सबसे बड़े मालवाहक जहाजों का आसानी से आगमन हो सकेगा।

उन्होंने बताया कि भारत के 75 प्रतिशत ट्रांसशिपमेंट संचालन पहले विदेशी बंदरगाहों पर किए जाते थे, जिससे देश को राजस्व का बड़ा नुकसान होता था। इस बात पर जोर देते हुए कि अब यह स्थिति बदलने वाली है, श्री मोदी ने बल देकर कहा कि भारत का पैसा अब भारत की सेवा करने में लगेगा और जो धनराशि कभी देश से बाहर जाती थी, वह अब केरल और विझिंजम के लोगों के लिए नए आर्थिक अवसर पैदा करेगी।

श्री मोदी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि एक दशक पहले जहाजों को बंदरगाहों पर लंबे समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी, जिससे उतारने के कार्यों में काफी देरी होती थी। उन्होंने कहा कि इस मंदी ने व्यवसायों, उद्योगों और समग्र अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। श्री मोदी ने जोर देकर कहा कि अब स्थिति बदल गई है और पिछले 10 वर्षों में भारत के प्रमुख बंदरगाहों ने जहाजों के टर्न-अराउंड समय को 30 प्रतिशत तक कम कर दिया है, जिससे परिचालन दक्षता में सुधार हुआ है। उन्होंने कहा कि बढ़ी हुई बंदरगाह दक्षता के कारण भारत अब कम समय में अधिक कार्गो वॉल्यूम संभाल रहा है, जिससे देश की रसद और व्यापार क्षमताएं मजबूत हो रही हैं।

उल्लेखनीय है कि 8,800 करोड़ रुपये की लागत वाला विझिंजम अंतरराष्ट्रीय डीप-वाटर बहुउद्देशीय बंदरगाह देश का पहला समर्पित कंटेनर ट्रांसशिपमेंट पोर्ट है, जो विकसित भारत के एकीकृत विजन के हिस्से के रूप में भारत के समुद्री क्षेत्र में हो रही परिवर्तनकारी प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है।

रणनीतिक महत्व वाले विझिंजम बंदरगाह को एक प्रमुख प्राथमिकता परियोजना के रूप में पहचाना गया है, जो वैश्विक व्यापार में भारत की स्थिति को मजबूत करने, रसद दक्षता को बढ़ाने और कार्गो ट्रांसशिपमेंट के लिए विदेशी बंदरगाहों पर निर्भरता को कम करने में योगदान देगा। लगभग 20 मीटर का इसका प्राकृतिक डीप ड्राफ्ट और दुनिया के सबसे व्यस्त समुद्री व्यापार मार्गों में से एक के पास इसका स्थान वैश्विक व्यापार में भारत की स्थिति को और मजबूत करता है। ■

भारत का डीबीटी: कल्याणकारी दक्षता में वृद्धि

ब्लूक्राफ्ट डिजिटल फाउंडेशन द्वारा किए गए एक नए मात्रात्मक मूल्यांकन के अनुसार, भारत की प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) प्रणाली ने कल्याणकारी वितरण में रिसाव को रोककर देश को अनुमानित 3.48 लाख करोड़ रुपये बचाने में मदद की है। रिपोर्ट में यह भी पाया गया है कि डीबीटी के कार्यान्वयन के बाद से सब्सिडी आवंटन कुल सरकारी व्यय के 16 प्रतिशत से घटकर 9 प्रतिशत रह गया है, जो सार्वजनिक व्यय की दक्षता में एक बड़ा सुधार दर्शाता है

यह मूल्यांकन बजटीय दक्षता, सब्सिडी युक्तिकरण और सामाजिक परिणामों पर डीबीटी के प्रभाव की जांच करने के लिए 2009 से 2024 तक के आंकड़ों का विश्लेषण करता है। यह दर्शाता है कि कागज़-आधारित वितरण से सीधे डिजिटल हस्तांतरण में बदलाव ने यह सुनिश्चित किया है कि सार्वजनिक धन उन लोगों तक पहुंचे जिनके लिए वे हैं। डीबीटी की प्रमुख विशेषताओं में से एक जेएएम ट्रिनिटी का उपयोग है, जिसका अर्थ है जन धन बैंक खाते, आधार विशिष्ट पहचान संख्या और मोबाइल फोन। इस ढांचे ने बड़े पैमाने पर लक्षित और पारदर्शी हस्तांतरण को सक्षम किया है।

इसके प्रभाव की पूरी सीमा को समझने के लिए रिपोर्ट में कल्याणकारी दक्षता सूचकांक पेश किया गया है। यह सूचकांक बचत और कम सब्सिडी जैसे राजकोषीय परिणामों को लाभार्थियों की संख्या जैसे सामाजिक संकेतकों के साथ जोड़ता है, जिससे यह स्पष्ट तस्वीर मिलती है कि प्रणाली कितनी अच्छी तरह काम कर रही है। यह सूचकांक 2014 में 0.32 से लगभग तीन गुना बढ़कर 2023 में 0.91 हो गया है, जो प्रभावशीलता और समावेशन दोनों में तेज वृद्धि को दर्शाता है।

ऐसे समय में जब दुनिया भर की सरकारें सामाजिक सुरक्षा को मजबूत करने के तरीकों पर पुनर्विचार कर रही हैं, डीबीटी मॉडल वित्तीय विवेक को न्यायसंगत शासन के साथ संरेखित करने में मूल्यवान सबक प्रस्तुत करता है।

मुख्य निष्कर्ष

बजटीय आवंटन रुझान

सब्सिडी आबंटन के आंकड़ों से डीबीटी कार्यान्वयन के बाद महत्वपूर्ण बदलाव का पता चलता है, जो लाभार्थी कवरेज में वृद्धि के बावजूद राजकोषीय दक्षता में सुधार को उजागर करता है।

डीबीटी-पूर्व युग (2009-2013): सब्सिडी कुल व्यय का औसतन 16 प्रतिशत थी, जो सालाना 2.1 लाख करोड़ रुपये थी तथा प्रणाली में काफी रिसाव था।

डीबीटी-पश्चात युग (2014-2024): 2023-24 में सब्सिडी व्यय कुल व्यय का 9 प्रतिशत तक कम हो गया, जबकि लाभार्थी कवरेज 16 गुना बढ़कर 11 करोड़ से 176 करोड़ हो गया।

कोविड-19 अपवाद: आपातकालीन वित्तीय उपायों के कारण 2020-21 वित्तीय वर्ष के दौरान सब्सिडी में अस्थायी वृद्धि हुई। हालांकि, महामारी के बाद दक्षता में उछाल आया, जिससे प्रणाली की दीर्घकालिक प्रभावशीलता और मजबूत हुई।

सब्सिडी आवंटन रुझान (2009-2024)

कवरेज में उल्लेखनीय वृद्धि के बावजूद सब्सिडी के बोझ में कमी, राजकोषीय आवंटन को अनुकूलित करने में डीबीटी की भूमिका को रेखांकित करती है। फर्जी लाभार्थियों और बिचौलियों को हटाकर इस प्रणाली ने बजट में आनुपातिक वृद्धि किए बिना वास्तविक प्राप्तकर्ताओं को धन पुनर्निर्देशित किया।

क्षेत्रीय विश्लेषण

क्षेत्र-विशिष्ट प्रभावों का विस्तृत विवरण दर्शाता है कि किस प्रकार डीबीटी ने विशेष रूप से उच्च-रिसाव कार्यक्रमों को लाभ पहुंचाया है।

खाद्य सब्सिडी (पीडीएस): 1.85 लाख करोड़ रुपये की बचत हुई, जो कुल डीबीटी बचत का 53 प्रतिशत है। यह मुख्य रूप से आधार से जुड़े राशन कार्ड प्रमाणीकरण के कारण संभव हुआ।

मनरेगा: 98 प्रतिशत मजदूरी समय पर हस्तांतरित की गई, डीबीटी-संचालित जवाबदेही के माध्यम से 42,534 करोड़ रुपये की बचत हुई।

पीएम-किसान: योजना से 2.1 करोड़ अयोग्य लाभार्थियों को हटाकर 22,106 करोड़ रुपये की बचत हुई।

उर्वरक सब्सिडी: 158 लाख मीट्रिक टन उर्वरक की बिक्री कम हुई, जिससे लक्षित वितरण के माध्यम से 18,699.8 करोड़ रुपये की बचत हुई।

क्षेत्रीय प्रभाव विश्लेषण

ये क्षेत्र-विशिष्ट बचतें उच्च-रिसाव कार्यक्रमों, जैसेकि खाद्य सब्सिडी और मनरेगा जैसी मजदूरी योजनाओं पर डीबीटी के असमान प्रभाव को उजागर करती हैं। बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण और प्रत्यक्ष हस्तांतरण में प्रणाली की भूमिका दक्षता में सुधार और दुरुपयोग को रोकने में महत्वपूर्ण रही है।

सह-संबंध और कारण संबंधी निष्कर्ष

सह-संबंध विश्लेषण कल्याणकारी वितरण में सुधार लाने में

डीबीटी की प्रभावशीलता को और अधिक रेखांकित करता है।

मजबूत सकारात्मक सह-संबंध (0.71): लाभार्थी कवरेज और डीबीटी बचत के बीच एक मजबूत सकारात्मक सह-संबंध है, जो दर्शाता है कि जैसे-जैसे कवरेज का विस्तार हुआ, बचत में भी वृद्धि हुई।

नकारात्मक सह-संबंध (-0.74): कुल व्यय के प्रतिशत के रूप में सब्सिडी व्यय और कल्याणकारी दक्षता के बीच एक महत्वपूर्ण नकारात्मक सह-संबंध है, जो किए गए अपव्यय और रिसाव में कमी को उजागर करता है और डीबीटी के कारण संभव हुआ है।

प्रमुख चरों के बीच सह-संबंध दर्शाने वाला हीट-मैप

हीट-मैप विश्लेषण बजट आवंटन, डीबीटी बचत और कल्याणकारी दक्षता के बीच संबंधों को मात्राबद्ध करता है। जैसे-जैसे डीबीटी बचत बढ़ी, सब्सिडी आवंटन में कमी आई, यह दर्शाता है कि डीबीटी ने रिसाव को कम करते हुए लक्षित करने में सुधार किया। इसने सरकार को कल्याणकारी कार्यक्रमों का विस्तार करने, राजकोषीय परिव्यय में वृद्धि किए बिना अधिक लाभार्थियों तक पहुंचने में सक्षम बनाया। सब्सिडी व्यय और दक्षता के बीच विपरीत संबंध 'घटते कल्याणकारी खर्च' की आलोचनाओं को चुनौती देता है और राजकोषीय अनुकूलन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में डीबीटी की भूमिका की पुष्टि करता है।

पिछले दशक में डीबीटी ने न केवल 3.48 लाख करोड़ रुपये के राजकोषीय रिसाव को तक कम किया है, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया है कि सब्सिडी बेहतर तरीके से लक्षित हो और कुल व्यय के प्रतिशत के रूप में सब्सिडी आवंटन में उल्लेखनीय गिरावट आई है

कल्याणकारी दक्षता सूचकांक (डब्ल्यूईआई)

प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) प्रणाली के प्रभाव का आकलन करने की कार्यप्रणाली के भाग के रूप में कल्याणकारी दक्षता सूचकांक (डब्ल्यूईआई) को विभिन्न आयामों में दक्षता लाभ को मापने के लिए एक समग्र मीट्रिक के रूप में विकसित किया गया था। डब्ल्यूईआई में तीन भारित घटक शामिल हैं:

डीबीटी बचत (50 प्रतिशत भार) : यह घटक रिसाव में प्रत्यक्ष कमी को दर्शाता है, जिसे 3.48 लाख करोड़ रुपये की अधिकतम देखी गई बचत के सापेक्ष सामान्यीकृत किया गया है।

सब्सिडी में कमी (30 प्रतिशत भार) : कुल राष्ट्रीय बजट के प्रतिशत के रूप में सब्सिडी व्यय में गिरावट को मापता है।

लाभार्थी वृद्धि (20 प्रतिशत भार) : जनसंख्या वृद्धि के लिए समायोजित लाभार्थियों की संख्या में विस्तार का आकलन करता है।

2014 में 0.32 से 2023 में 0.91 तक डब्ल्यूईआई में वृद्धि प्रणालीगत सुधारों को मात्राबद्ध करती है, जो इस बात पर जोर देती है कि दक्षता लाभ बहुआयामी कारकों से उत्पन्न होते हैं - न कि केवल बजट कटौती से। यह सूचकांक वैश्विक नीति निर्माताओं के लिए कल्याणकारी सुधारों का मूल्यांकन करने के लिए एक अनुकरणीय मॉडल प्रदान करता है।

डब्ल्यूईआई में वृद्धि निम्नलिखित कारणों से हुई:

डीबीटी बचत (50 प्रतिशत भार) : 3.48 लाख करोड़ रुपए की संचयी रिसाव में कमी।

सब्सिडी में कमी (30 प्रतिशत भार) : कुल व्यय में 16 प्रतिशत से 9 प्रतिशत तक की गिरावट।

लाभार्थी वृद्धि (20 प्रतिशत भार) : कवरेज में 16 गुना विस्तार।

निष्कर्ष

प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (सब्सिडी) प्रणाली देश की कल्याणकारी वितरण के लिए एक परिवर्तनकारी उपकरण साबित हुई है, जो सार्वजनिक खर्च की दक्षता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाती है और सामाजिक लाभों की पहुंच का विस्तार करती है। पिछले दशक में डीबीटी ने न केवल 3.48 लाख करोड़ रुपये के राजकोषीय रिसाव को तक कम किया है, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया है कि सब्सिडी बेहतर तरीके से लक्षित हो और कुल व्यय के प्रतिशत के रूप में सब्सिडी आवंटन में उल्लेखनीय गिरावट आई है। कल्याणकारी दक्षता सूचकांक (डब्ल्यूईआई) में वृद्धि लाखों लाभार्थियों के लिए कवरेज का विस्तार करते हुए राजकोषीय संसाधनों के अनुकूलन में डीबीटी की सफलता को रेखांकित करती है। क्षेत्र-विशिष्ट बचत, विशेष रूप से खाद्य सब्सिडी, मनरेगा और पीएम किसान जैसे उच्च-रिसाव कार्यक्रमों में दर्शाती है कि कैसे आधार और मोबाइल-आधारित हस्तांतरण प्रणाली के एकीकरण ने अक्षमताओं संबोधित है और दुरुपयोग को कम किया है।

ब्लूक्राफ्ट डिजिटल फाउंडेशन की रिपोर्ट के अनुसार यह डेटा-संचालित मूल्यांकन दर्शाता है कि राजकोषीय विवेक और समावेशिता एक साथ चल सकते हैं, जो दुनिया भर के नीति निर्माताओं को अपने स्वयं के सामाजिक सुरक्षा मॉडल को परिष्कृत करने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। जैसे-जैसे सरकारें राजकोषीय बाधाओं और सामाजिक इक्विटी को संतुलित करने के लिए संघर्ष कर रही हैं, डीबीटी के साथ भारत का अनुभव आर्थिक और सामाजिक विकास दोनों को बढ़ावा देने में प्रत्यक्ष हस्तांतरण की प्रभावकारिता के लिए एक सम्मोहक मामला प्रस्तुत करता है। इस सफलता की कहानी से सीखे गए सबक कल्याणकारी प्रणालियों को अधिक कुशल, पारदर्शी और समावेशी बनाने के वैश्विक प्रयासों का मार्गदर्शन कर सकते हैं। ■

पहलगाम में हुआ यह हमला आतंक के सरपरस्तों की हताशा को दिखाता है: नरेन्द्र मोदी

मैं पीड़ित परिवारों को फिर भरोसा देता हूं कि उन्हें न्याय मिलेगा, न्याय मिलकर रहेगा। इस हमले के दोषियों और साजिश रचने वालों को कठोरतम जवाब दिया जाएगा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 27 अप्रैल को मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की 121वीं कड़ी की शुरुआत में कहा कि आज जब मैं आपसे 'मन की बात' कर रहा हूं, तो मन में गहरी पीड़ा है। 22 अप्रैल को पहलगाम में हुई आतंकी वारदात ने देश के हर नागरिक को दुःख पहुंचाया है। पीड़ित परिवारों के प्रति हर भारतीय के मन में गहरी संवेदना है। भले वो किसी भी राज्य का हो, वो कोई भी भाषा बोलता हो, लेकिन वो उन लोगों के दर्द को महसूस कर रहा है, जिन्होंने इस हमले में अपने परिजनों को खोया है। मुझे ऐहसास है, हर भारतीय का खून, आतंकी हमले की तस्वीरों को देखकर खौल रहा है। पहलगाम में हुआ यह हमला आतंक के सरपरस्तों की हताशा को दिखाता है, उनकी कायरता को दिखाता है।

श्री मोदी ने कहा कि ऐसे समय में जब कश्मीर में शांति लौट रही थी, स्कूल-कॉलेजों में एक vibrancy थी, निर्माण कार्यों में अभूतपूर्व गति आई थी, लोकतंत्र मजबूत हो रहा था, पर्यटकों की संख्या में रिकॉर्ड बढ़ोतरी हो रही थी, लोगों की कमाई बढ़ रही थी, युवाओं के लिए नए अवसर तैयार हो रहे थे। देश के दुश्मनों को, जम्मू-कश्मीर के दुश्मनों को ये रास नहीं आया। आतंकी और आतंक के आका चाहते हैं, कश्मीर फिर से तबाह हो जाए और इसलिए इतनी बड़ी साजिश को अंजाम दिया।

उन्होंने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ इस युद्ध में देश की एकता, 140 करोड़ भारतीयों की एकजुटता, हमारी सबसे बड़ी ताकत है। यही एकता आतंकवाद के खिलाफ हमारी निर्णायक लड़ाई का आधार है। हमें देश के सामने आई इस चुनौती का सामना करने के लिए अपने संकल्पों को मजबूत करना है। हमें एक राष्ट्र के रूप में दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रदर्शन करना है। आज दुनिया देख रही है, इस आतंकी हमले के बाद पूरा देश एक स्वर में बोल रहा है।

श्री मोदी ने कहा कि भारत के हम लोगों में जो आक्रोश है, वो आक्रोश पूरी दुनिया में है। इस आतंकी हमले के बाद लगातार दुनिया-भर से संवेदनाएं आ रही हैं। मुझे भी वैश्विक नेताओं ने फोन किए हैं, पत्र लिखे हैं, संदेश भेजे हैं। इस जघन्य तरीके से किए गए आतंकी हमले की सबने कठोर निंदा की है। उन्होंने मृतकों के परिवारजनों के प्रति संवेदनाएं प्रकट की हैं। पूरा विश्व आतंकवाद के खिलाफ हमारी लड़ाई में 140 करोड़ भारतीयों के साथ खड़ा है। मैं पीड़ित परिवारों को फिर भरोसा देता हूं कि उन्हें न्याय मिलेगा, न्याय मिलकर रहेगा। इस हमले के दोषियों और साजिश रचने वालों को कठोरतम जवाब दिया जाएगा।

भारत एक वैश्विक अंतरिक्ष शक्ति

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि इसी महीने अप्रैल में आर्यभट्ट सेटेलाइट की लॉन्चिंग के 50 वर्ष पूरे हुए हैं। आज जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं, 50 वर्षों की इस यात्रा को याद करते हैं, तो लगता है हमने कितनी लंबी दूरी तय की है।

श्री मोदी ने कहा कि आज भारत एक वैश्विक अंतरिक्ष शक्ति बन चुका है। हमने एक साथ 104 सेटेलाइट का लांच करके रिकॉर्ड बनाया है। हम चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने वाले पहले देश बने हैं। भारत ने मार्स ऑर्बिटर मिशन लांच किया है और हम आदित्य-L1 मिशन के जरिए सूरज के काफी करीब तक पहुंचे हैं। आज भारत पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा किफायती, लेकिन सफल अंतरिक्ष कार्यक्रम का नेतृत्व कर रहा है। दुनिया के कई देश अपनी सैटेलाइट और स्पेस मिशन के लिए ISRO की मदद लेते हैं।

देश के महान वैज्ञानिक डॉ. के. कस्तूरीरंगन

श्री मोदी ने कहा कि दो दिन पहले हमने देश के महान वैज्ञानिक डॉ. के. कस्तूरीरंगन जी को खो दिया है। जब भी कस्तूरीरंगन जी से मुलाकात हुई, हम भारत के युवाओं की प्रतिभा, आधुनिक शिक्षा, अंतरिक्ष विज्ञान ऐसे विषयों पर काफी चर्चा करते थे। विज्ञान, शिक्षा और भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को नई ऊंचाई देने में उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। उनके नेतृत्व में ISRO को एक नई पहचान मिली। ■

भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते का हुआ सफल समापन

रोजगार, निर्यात और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने वाला एक ऐतिहासिक और महत्वाकांक्षी सौदा

भारत को लगभग 99 प्रतिशत टैरिफ लाइनों पर टैरिफ उन्मूलन से होगा लाभ

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री श्री कीर स्टारमर ने छह मई को पारस्परिक रूप से लाभकारी भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) के सफल समापन की घोषणा की। यह दूरदर्शी समझौता भारत के विकसित भारत 2047 के दृष्टिकोण के अनुरूप है और दोनों देशों की विकास आकांक्षाओं को पूरा करता है।

यह नवंबर, 2024 में ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान दोनों प्रधानमंत्रियों के बीच हुई चर्चाओं पर आधारित है। दोनों प्रधानमंत्रियों के बीच बैठक के बाद फरवरी, 2025 में गहन एफटीए वार्ता फिर से शुरू हुई। इसमें वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल और ब्रिटेन के विदेश मंत्री जोनाथन रेनॉल्ड्स और उनके दलों के बीच कई बैठकें हुईं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'एक्स' पर अपने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि एक ऐतिहासिक उपलब्धि में भारत और ब्रिटेन ने एक महत्वाकांक्षी और पारस्परिक रूप से लाभकारी मुक्त व्यापार समझौते के साथ-साथ एक डबल कंट्रीब्यूशन कन्वेंशन को सफलतापूर्वक संपन्न किया है। ये ऐतिहासिक समझौते हमारी व्यापक रणनीतिक साझेदारी को बढ़ाएंगे और दोनों अर्थव्यवस्थाओं में व्यापार, निवेश, विकास, रोजगार सृजन और नवाचार को बढ़ावा देंगे।

वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने प्रधानमंत्री को उनके मार्गदर्शन और प्रोत्साहन के लिए धन्यवाद दिया। इससे व्यापार समझौता संभव हो सका और जिनके दूरदर्शी नेतृत्व में भारत को दुनिया के 'विश्व मित्र - विश्वसनीय भागीदार' के रूप में देखा जाता है।

श्री गोयल ने कहा, "यह समझौता दो बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच न्यायसंगत और महत्वाकांक्षी व्यापार के लिए एक नया मानदंड स्थापित करता है। इससे भारतीय किसानों, मछुआरों, श्रमिकों, एमएसएमई, स्टार्टअप और इनोवेटर्स को फायदा होगा। यह हमें वैश्विक आर्थिक महाशक्ति बनने के लक्ष्य के और करीब लाता है। यह एफटीए केवल वस्तुओं और सेवाओं के बारे में नहीं है, बल्कि लोगों, संभावनाओं और समृद्धि के बारे में भी है। यह वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में भारत की अधिक भागीदारी के नए रास्ते खोलते हुए हमारे मूल हितों की रक्षा करता है।"

यह एफटीए भारत और ब्रिटेन के बीच बढ़ते आर्थिक संबंधों की पृष्ठभूमि में हुआ है इसका उदाहरण लगभग 60 अरब डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार है, इसके 2030 तक दोगुना होने का अनुमान है।

भारत-ब्रिटेन एफटीए की मुख्य विशेषताएं

- ब्रिटेन के साथ एफटीए एक आधुनिक, व्यापक और ऐतिहासिक समझौता है, इसका उद्देश्य व्यापार उदारीकरण और टैरिफ रियायतों के साथ-साथ आर्थिक एकीकरण हासिल करना है।
- एफटीए सभी क्षेत्रों में वस्तुओं के लिए व्यापक बाजार पहुंच सुनिश्चित करता है, इसमें भारत के सभी निर्यात हित शामिल हैं। भारत को लगभग 99 प्रतिशत टैरिफ लाइनों पर टैरिफ उन्मूलन से लाभ होगा, यह लगभग 100 प्रतिशत व्यापार मूल्य को कवर करेगा। इससे भारत और ब्रिटेन के बीच द्विपक्षीय व्यापार में वृद्धि के बड़े अवसर मिलेंगे।
- एफटीए श्रम और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में विनिर्माण पर सकारात्मक प्रभाव डालता है और कपड़ा, समुद्री उत्पाद, चमड़ा, जूते, खेल के सामान और खिलौने, रत्न और आभूषण जैसे क्षेत्रों और इंजीनियरिंग सामान, ऑटो पार्ट्स और इंजन और कार्बनिक रसायन जैसे अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों के लिए निर्यात के अवसर खोलता है। इससे अन्य देशों के मुकाबले ब्रिटेन में भारतीय वस्तुओं की प्रतिस्पर्धात्मकता में काफी सुधार होगा।
- एफटीए से भारत में रोजगार में महत्वपूर्ण सकारात्मक फायदा होगा।
- भारत को ब्रिटेन के साथ महत्वाकांक्षी एफटीए से आईटी/आईटीईएस, वित्तीय सेवाओं, व्यावसायिक सेवाओं, अन्य व्यावसायिक सेवाओं और शैक्षिक सेवाओं जैसी सेवाओं में फायदा होगा। इससे नए अवसर और नौकरियां सृजित होंगी।
- प्रतिभाशाली और कुशल भारतीय युवाओं के लिए ब्रिटेन में अपार अवसर खुलेंगे। यह मजबूत वित्तीय और व्यावसायिक सेवा क्षेत्रों और उन्नत डिजिटल बुनियादी ढांचे के कारण डिजिटल रूप से वितरित सेवाओं के लिए एक प्रमुख वैश्विक केंद्र है। ■

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने आगामी जनगणना में जातिवार गणना की दी मंजूरी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल की राजनीतिक मामलों की समिति ने 30 अप्रैल को आगामी जनगणना में जातिवार गणना शामिल करने का निर्णय लिया। यह वर्तमान सरकार की राष्ट्र और समाज के समग्र हितों और मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता दर्शाती है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 246 के अनुसार जनगणना संघ का विषय है, जो सातवीं अनुसूची के संघ सूची में 69वें स्थान पर उल्लिखित है। हालांकि, कुछ राज्यों ने जातिवार गणना के लिए सर्वेक्षण किए हैं, पर इनमें पारदर्शिता और उद्देश्य अलग-अलग रहे हैं। कुछ सर्वेक्षण पूरी तरह राजनीति के दृष्टिगत किए गए हैं, जिससे समाज में दुविधा उत्पन्न हुई है। इन सभी स्थितियों को ध्यान में रखते हुए तथा सामाजिक ताने-बाने को राजनीतिक दबाव से मुक्त रखना सुनिश्चित करने हेतु अलग-अलग सर्वेक्षणों की बजाय मुख्य जनगणना में ही जातिवार जनगणना कराने का निर्णय लिया गया है।

यह सुनिश्चित करेगा कि समाज आर्थिक और सामाजिक रूप से मजबूत रहे और देश की प्रगति बिना किसी अवरोध के जारी रहे। उल्लेखनीय है कि आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किये जाने पर समाज के किसी वर्ग में तनाव पैदा नहीं हुआ।

देश की आज़ादी के बाद से अब तक की सभी जनगणनाओं में जाति को बाहर रखा गया है। वर्ष 2010 में तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय डॉ. मनमोहन सिंह ने लोकसभा को आश्वस्त किया था कि जातिवार जनगणना कराने के मुद्दे पर कैबिनेट में विचार किया जाएगा। इस विषय पर विचार-विमर्श के लिए मंत्रियों का एक समूह भी बनाया गया था। इसके अलावा, अधिकांश राजनीतिक दलों ने जातिवार जनगणना की सिफारिश की थी। इसके बावजूद भी पिछली सरकार ने जातिगत जनगणना की बजाय सामाजिक-आर्थिक और जाति जनगणना सर्वेक्षण (एसईसीसी) का विकल्प चुना। ■

कमल संदेश के आजीवन सदस्य बनें

आज ही लीजिए कमल संदेश की सदस्यता और दीजिए राष्ट्रीय विचार के संवर्धन में अपना योगदान!

सदस्यता प्रपत्र

नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन : .....

दूरभाष : ..... मोबाइल : (1)..... (2).....

ईमेल : .....

सदस्यता						
	एक वर्ष	₹350/-	☐	आजीवन सदस्यता (हिन्दी/अंग्रेजी)	₹3000/-	☐
	तीन वर्ष	₹1000/-	☐	आजीवन सदस्यता (हिन्दी+अंग्रेजी)	₹5000/-	☐

(भुगतान विवरण)

चेक/ड्राफ्ट क्र. :..... दिनांक :..... बैंक : .....

नोट : डीडी / चेक '**कमल संदेश**' के नाम देय होगा।
मनी आर्डर और नकद पूरे विवरण के साथ स्वीकार किए जाएंगे।

(हस्ताक्षर)

कमल संदेश

अपना डीडी/चेक निम्न पते पर भेजें

डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पीपी-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003

फोन: 011-23381428 फैक्स: 011-23387887 ईमेल: kamalsandesh@yahoo.co.in

26 अप्रैल, 2025 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से
'रोज़गार मेला' को संबोधित करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

नई दिल्ली में 29 अप्रैल, 2025 को भारत मंडपम में
युगम् इनोवेशन कॉन्क्लेव में भाग लेते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

तिरुवनंतपुरम (केरल) में 02 मई, 2025 को
विझिंजम अंतरराष्ट्रीय बंदरगाह राष्ट्र को समर्पित करते
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

अमरावती (आंध्र प्रदेश) में 02 मई, 2025 को विभिन्न
परियोजनाओं का शिलान्यास, उद्घाटन एवं राष्ट्र को समर्पित करते
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

हैदराबाद हाउस (नई दिल्ली) में 03 मई, 2025 को अंगोला
गणराज्य के राष्ट्रपति श्री जोआओ मैनुअल गोंकाल्वेस लौरेंको से
मुलाकात करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

नई दिल्ली में 29 अप्रैल, 2025 को सुरक्षा पर एक बैठक की
अध्यक्षता करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

कमल संदेश
अब इंटरनेट पर भी उपलब्ध
लॉग इन करें:
www.kamalsandesh.org
राष्ट्रीय विचार की प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका

@Kamal.Sandesh
@KamalSandesh
kamal.sandesh
KamalSandeshLive

प्रेषण तिथि: (i) 1-2 चालू माह (ii) 16-17 चालू माह
डाकघर: लोदी रोड एच.ओ., नई दिल्ली **"रजिस्टर्ड"**
36 पृष्ठ कवर सहित
प्रकाशन तिथि: 23 मई, 2025
आर.एन.आई. DELHIN/2006/16953
डी.एल. (एस)-17/3264/2025-27
Licence to Post without Prepayment
Licence No. U(S)-41/2021-23

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 13 मई, 2025 को पंजाब स्थित आदमपुर एयरबेस का दौरा किया

छायाकार: अजय कुमार सिंह